महारामायण

पंचम (सुपंथ) खण्ड

(महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराजकृत)

—:०:—

सम्पादक—

नन्दू भाई

निज़ामाबाद (दक्षिण)

—:०:—

स० सम्पादक—

देवीचरन मीतल

लेखराजनगर, अलीगढ़

—❀—

प्रकाशक—

नन्दू भाई प्रधान

शिव साहित्य प्रकाशन मंडल,

पो० दयाल नगर, अलीगढ़ ।

द्वितीय संस्करण | सर्वाधिकार सुरक्षित | मूल्य १) प्रति

सं० शाका १८८४

विषय सूची--पांचवाँ (सुपन्थ) खंड

प्रथम भाग

पहिला	समुल्लास	हनुमान का लंका जाना	३८१
दूसरा	,,	लंका का नगर	३८७
तीसरा	,,	हनुमान और विभीषण	३९१
चौथा	,,	हनुमान और अशोक वाटिका	३९४
पाँचवां	,,	हनुमान और सीता	४००
छटवाँ	,,	राज वाटिका में उत्पात	४०३
सातवाँ	,,	हनुमान रावण	४०६
आठवाँ	,,	हनुमान लंका दहन	४०९
नवाँ	,,	हनुमान और चूणामणि	४१२
दसवां	,,	चूणामणि	४१४

द्वितीय भाग

पहिला	,,	हनुमान लंका से लौटे	४२०
दूसरा	,,	किष्किन्धा की वाटिका	४२३
तीसरा	,,	राम को सीता का समाचार	४२४
चौथा	,,	राम की सैना	४२७
पाँचवां	,,	समुद्र का तट	४२८
छटवाँ	,,	लंका में खलबली	४३२
सातवाँ	,,	समुद्र तट पर राक्षसों का आगमन	४३६
आठवाँ	,,	राम की सैना की पूर्ति	४३९
नवां	,,	बंदर वृति (चंचल वृति) की मुख्यता और उत्तमता	४४३
दसवां	,,	निर्गुण और सगुण ब्रह्म	४४७
ग्यारहवां	,,	रावण के दूत	४५०

ओ३म् जनः

महारामायण

पाँचवां सुपन्थ खण्ड

(सुन्दर काण्ड)

ओ३म् जनः

प्रथम भाग

पहिला समुल्लास

हनूमान का लँका जाना

मन में प्रबल इच्छा हो, सतसंग मिल जाय, कृपालु गुरु हाथ आ जाय, रास्ते का पता लग जाय फिर साहस संयुक्त अधिकारी आप ही आप पंथ पर लग जाता है। समुन्दर भी राह में आये, वह लाँघ जायगा। पहाड़ बीच में खड़ा हो जाय, वह ढा देगा और अपना रास्ता निकाल लेगा।

हनूमान सुसेवक थे। राम की सेवा का इष्ट धारण कर रक्खा था। जामवन्त जैसा साहस दिखाने वाला समझदार गुरु मिल गया। उसने चेतावनी दी। अहंकार रहित हनूमान के अन्तर में उत्साह उत्पन्न हुआ।

कैसे संभव हैं हमारी कामना पूरी न हो।
हो प्रबल इच्छा तो कैसे लालसा पूरी न हो॥
मर मिटेंगे धुन में अपने तन की मन की सुधि को त्याग।
इष्ट का अभिमान! क्यों कर लालसा पूरी न हो॥
कर लिया विश्वास आशा पक्की चित्त में आगई।
कौन कहता है हमारी वासना पूरी न हो॥

हनूमान ने अपने साथियों से कहा—"मैं जाता हूँ। बहुत जल्द सीता की सुध लेकर फिरूंगा। सिर पर जो सुख दुख पड़े, सहो। यहाँ कन्द मूल फल बहुत हैं। मेरे आये बिना तुम यहाँ से हटना नहीं।"

यह कह कर सबको नमस्कार किया और राम का ध्यान मन में रखकर आगे की ओर पग बढ़ाया। एक पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गये। वह मैनाक पर्वत से मिली हुई थी। चले तो आँधी के समान! सन सनाकर उड़े, जैसे राम और लक्ष्मण के बाण उड़ते हैं। देवताओं ने देखा कि हनूमान लंका को जा रहे हैं। सुरसा (सुर-देवता सा-माया) से कहा—'जा परीक्षा कर। यह यों ही जा रहे हैं या इनमें कुछ बल पराक्रम भी है।' वह आई। 'ठहर कहां जाता है! मैं तुझे खाऊंगी। बहुत दिनों से भूकी हूं।'

हनूमान ने नमस्कार किया। "ठहर। मैं राम का काम कर आऊं। सीता का समाचार उन्हें सुना दूँ। फिर तेरे पास आ जाऊंगा। मुझे खा लेना और अपना पेट भर लेना। सौगन्द खाता हूं कि लौट कर तुझसे मिलूंगा।"

सुरसा—"मैं तेरे झाँसे में आने वाली नहीं हूँ।" हनूमान—'तो फिर मैं भी तेरी बात का मानने वाला नहीं हूं।'

उसने अपना मुंह बढ़ाया। यह 'महिमा' सिद्धि का सहारा लेकर बड़े डील डौल वाले होगये। वह छोटी होकर इन्हें डसने चली। यह पत्थर जैसे भारी और कड़े होगये। यह 'गिरिमा' साधन का प्रताप था। उसका डंस इनके बज्र शरीर में न गढ़ सका। वह फिर बहुत बड़ी बनकर इन्हें निगलने चली। राम ने इन्हें 'अणिमा' मुद्रा सिखाकर सीता के पास भेजा था और कहा था – "इस मुद्रा को देखकर सीता समझ जायगी कि तुम मेरे दूत हो।" वह छोटे बन गये। उसके शरीर में आये और फुदक कर नाक या कान की राह से बाहर निकल कर लंका का रास्ता लेने लगे।

सुरसा को आश्चर्य हुआ। 'तू परीक्षा में पूरा उतरा। जो परीक्षित (परीक्षा-उत्तीर्ण) नहीं होता वह काम का शिष्य नहीं होता। तू सयाना है, समझदार है। जा, निर्भयता से राम का काम कर।'

तुमको विश्वास नहीं आयेगा कि मनुष्य भी पक्षियों के समान आकाश-मंडल में उड़ सकता है। उसे अपनी मानसिक वृति को सूक्ष्म बना लेना है। मनुष्य के तीन शरीर हैं—कारण, सूक्ष्म और स्थूल। स्थूल-तामसी' आलसी और मूढ़ है; सूक्ष्म-चंचल, राजसी और कूद फाँद करने वाला है। कारण आधार मात्र हैं। जो मनुष्य जिस शरीर में अधिक रहता है उसका व्यौहार भी उसी के अनुसार होता है। इसमें कोई आश्चर्य करने की बात नहीं है। हां, अभी इसके समझने का समय इस कलयुग में नहीं आ रहा है। वह आयेगा और मनुष्य पक्षियों के समान उड़ता फिरता दिखाई देगा। अभी

वह यह काम युक्ति, बुद्धि और कला कौशलता से ले रहा है। जहाँ उसने चित्त शक्ति का प्रभाव समझ लिया फिर उसके मन का बल बढ़ जायेगा।

है कठिन चलना जब हो स्थूल तुम।
सूक्ष्म होकर बनते हलके फूल तुम॥
और जब कारण से तुमको काम है।
अपने घट में आप ही विश्राम है॥
स्वप्न में तुम चाहो जो वैसा करो।
जिस जगह जाना हो घूमो और फिरो॥
मन तुम्हारा सूक्ष्मता की देह है।
इसमें पर्वत बन पहाड़ और गेह है॥
यह है पतला दुबला और मोटा है यह।
यह है साधारण कभी छोटा है यह॥
यह है भारी इसमें गरिमा शक्ति है।
यह बड़ा है इसमें महिमा शक्ति है॥
इसमें अणिमा छोटे होने का है भाव।
सूझते हैं इसको लाखों पेच दाव॥
योग की हैं जितनी सिद्धि शक्तियाँ।
अपने मन की समझो तुम नौ निद्धियाँ॥
चित की वृत्ती का किया तुमने निरोध।
त्याग करके लोभ मोह और काम क्रोध॥
तुम में आजायेंगी सारी शक्तियाँ।
सूझने में आयेंगी सब युक्तियां॥

हनूमान उड़े। समुद्र में राक्षसी माया (साइंस), कला कौशल के कल लगे हुये थे। उड़ते हुये पक्षी का प्रतिबिम्ब इस पर पड़ते ही उस कल में क्षोभ उत्पन्न होता था और वह

अपनी आकर्षण शक्ति से नीचे खींचकर वहीं उसे पानी में डुबा दिया करता था।

हम में से लोग अभी इन बातों की समझ नहीं रखते। माया कोई जादू मन्त्र टोना नहीं है। माया नाम साइंस का है और यह साइंस बाहर मुखी पदार्थों का समझना बूझना, उन्हें अपने वसीभूत करके काम में लाने की विद्या है। अज्ञानी हिन्दुओ! तुम महा पाखंडी होकर भूल भ्रम में पड़े हुये हो। ऋषियों के सिद्धान्त की समझ बूझ खो बैठे। अपनी समझ बूझ पर मिट्टी डाल ली। नहीं तो जो कुछ प्राचीन ऋषि तुम्हें दे गये हैं सभ्य जगत अब तक इसके समझने के योग्य भी नहीं बना है। केवल एक रामायण को सचेत होकर पढ़ो। बहुत सी बातें तुम्हारी समझ में आप आने लगेंगी। यह तुम्हारा बहुमूल्य ग्रन्थ है। ग्रन्थ क्या है! सारी सिद्धि शक्ति, मुक्ति, भक्ति और बुद्धि का भँडार है। 'रामा रामा भजो' ही रामायण नहीं है। यह प्रकृति की विद्याओं का भँडार है। अधिकार संस्कार खो गया। अलंकारों की समझ बूझ जाती रही। न कोई समझाता है, न कोई समझता है।

अपाहज बने आलसी हो गये तुम।
कहाँ जाग है कैसे अब सो गये तुम॥
नहीं आपा है आपे से खो गये तुम।
सभी खो गया और जन्म को रोगये तुम॥
भंवर में पड़ी आके नैया तुम्हारी।
मरो डूबो बुद्धि मती बिगड़ी सारी॥
नहीं जानते माया को, क्या है माया।
समझते नहीं धूप क्या, क्या है छाया॥
समझ में नहीं अब तलक तुमको आया।
दिया सबको खो सोचो क्या तुमने पाया॥

न जाना है क्या राम क्या लक्ष्मण है।
न समझा भरत क्या है क्या शत्रुघन है॥
किया राम का हाय अपमान तुमने।
लिया हाय! भ्रम और अज्ञान तुमने॥
नहीं पाया प्रमाण अनुमान तुमने।
किया कब कभी इनका सन्मान तुमने॥
अपाहज हुये आलसी बन के सोये।
खुली आंख और जन्मको अपने रोये॥

हनूमान ने देखा कि समुद्र के मायावी कल में क्षोभ है. अणिमा वृत्ति का साधन किया। मच्छर के रूप को धारण किया और फन फनाते हुये उस कल के आकर्षण को अपने ऊपर नहीं आने दिया। उड़े और तटके समीप जा पहुँचे।

तट पर बहुत बड़ी कल हिलने डोलने और खाने वाली थी। इस में बहुत बड़ी शक्ति थी। हनूमान ने गणिमा और महिमा का रूप धारण कर लिया और अपनी युक्ति से तोड़ फोड़ कर उछले और किनारे लगे।

लँका में बड़ी चौकसी थी। पहरे वाले बड़े सचेत रहते थे। इनकी दृष्टि से बच कर निकलना फिर भी कठिन था। फिर अणिमा वृत्ति का साधन किया। राम ने उन्हें इस मुद्रा को सिखा रखा था। छोटे बने। सब की आंख बचा कर निकल भागे। इन्होंने सब को देखा। इन्हें किसी ने भी नहीं देखा।

स्वप्न की लीला को अपने लो परख।
तुम कभी छोटे बड़े हो लो निरख॥
स्वप्न में जो चाहो बन जाओ अभी।
चलते फिरते ठहरो उड़ जाओ अभी॥
स्वप्न में यह देह सूक्ष्म जान लो।
देह यह मन है इसे पहिचान लो॥

मन में बैठो मन में पैठो मन को जान।
मन ही में है सब तुम्हारे ज्ञान ध्यान॥
खोल कर कहता हूँ कह देता हूँ बात।
मन ही में है दाव पेच और मन में घात॥
बैठो मन के घाट पर मन बस करो।
मन को साधो और न अब टस मस करो॥
मन तुम्हारे हाथ में आयेगा जब।
सूझ युक्ति से सुझायेगा रब सब॥

दूसरा समुल्लास

लंका का नगर

आगये! समुद्र को पार कर लिया। यह हुआ। अब क्या करें। वहां कौन था, जो इन्हें पता बता देता। राज काज का सारा प्रबन्ध मायावी (साइंटिफिक) था। जगह जगह पृथ्वी को खोखली करके रावण के कर्मचारियों ने भीतर ही भीतर कोट बना रक्खे थे। ऐसे कोट समुद्र में भी थे। ऊपर ऊपर पानी और पानी के नीचे राक्षसों (अपनी ही रक्षा करने वाले निश्चरों) की पलटन की पलटन रहती हुई दुरबीन लिये हुये देखा करती थीं कि कहीं कोई अन्य देशी शत्रु या गुप्त दूत तो नहीं आरहा है। जल थल दोनों जगहों में यह प्रबन्ध था।

इधर देखा, उधर देखा, कोई बात समझ में नहीं आई। सामने एक पहाड़ी दिखाई दी। उसकी चोटी पर चढ़ गये। दृष्टि साधन की जोति मुद्रा में निपुण थे। उस पर आये, लंका दिखाई दी।

यह लंका सोने की थी। सोने का नाम स्वर्ण है। यह दूर से जगमगा रही थी। ऊँचे ऊँचे खम्भों पर सोने के कलश

चढ़े हुए थे। लोगों के घर दस दस, पचास पचास, अस्सी अस्सी मंजिलों के बने हुए थे। इन सबकी भीतों (दीवारों) पर सोने का रँग फिरा हुआ था। यह सूरज की धूप में चमक रहीं थीं। आंखें चकाचौंध होती थीं।

लम्बी चौड़ी सड़कें बनी हुई थीं। जगह जगह पर पानी की नदी चल रही थीं। बाटिकाओं (बागों) की गिनती कौन कर सकता है। इनके वृक्ष फल फूल और पत्तों से लदे हुये लहलहा रहे थे। मगर साफ सुथरा! कूड़े करकट का कहीं नाम तक नहीं। एक तिनका भी कहीं नहीं दिखाई देता था। रथ, बहली और नाना प्रकार के बाहन दौड़ रहे थे। गलियों गलियों में ऊँचे ऊँचे शिवाले, देवाले, मठ, देवीआले उसकी शोभा को चार चाँद लगा रहे थे।

नगर क्या था वह स्वर्ग भूमी बना था।
रतन पन्नों और हीरों से वह जड़ा था॥
कहीं टूटा फूटा कोई घर न देखा॥
सुखी सब थे कोई भिखारी न भूका।
न निरधन न निर्वंज न रोगी था कोई।
न बेकाम था और न सोगी था कोई॥
चकित देख कर होगये, उसको हनुमत।
यह सोचा चलो देखो बस्ती को सदगत॥

लँका एक पहाड़ी पर बसी हुई थी, जिसका नाम त्रिकूट था और कोई कोई प्राणी उसे त्रिकुटी नगर कहते थे। इस पहाड़ी पर तीन चोटियां, वैष्णवों के तिलक के आकार की थीं। उन पर रावण ने अपूर्व बुद्धिमता से इसे बसाया था। बुद्धि काम नहीं करती थी।

गढ़ त्रकूट पर लँका बसे। निडर निशँक रावण तहां रहे॥
अद्भुत छवि को वरणे पारा। चित्रकार ने नगर सवाँरा॥
चित्र, विचित्र नगर की शोभा। देख पवन सुत का मन छोभा।
स्वप्न समान सूक्ष्म यह देशा। निश्चर बसें धार बहु भेषा॥
सुन्दर नर नारी जहाँ डोलें। हँस मुख मीठी बाणी बोलें॥

यह पहाड़ी से नीचे उतरे। छोटा भेष धारण किया। नगर के फाटक पर पहुंचे। उस पर लंकनी नामक एक राक्षसी का पहरा था। रावण की राजनीति के अनुसार स्त्री और पुरुष सब से काम लिया जाता था। सब रात दिन काम करते रहते थे। वह किसी एक को भी बिना काम और उद्यम नहीं रहने देता था। यही कारण था कि उसकी प्रजा सब की सब बली और पराक्रमी थी।

लंकिनी हनूमान पर झपटी—"चोर! तू यहां कैसे आया। नहीं जानता! मैं नगर की रखवाली कर रही हूँ। सब की आंखों में धूल डाल आया। मेरे हाथ से बच कर न जाने पावेगा। मैं तुझे खा जाऊँगी। लंका का चोर मेरा अहार है।" हनूमान को उस समय और कुछ न सूझी। घूँसा तान कर उसकी पीठ पर मारा। वह विकल होगई। कहने लगी—"मैं समझ गई, देवताओं ने मुझे कह रक्खा था कि जब किसी बानर का घूँसा खाकर तू विकल हो जायगी तो समझ लेना कि लंका के विनाश का समय आगया। दैव इच्छा प्रबल है। जा, तू अपना काम कर। मैं तुझे नहीं रोक सकती। तुझे देख लिया। तू राम का दूत है। तेरे दर्शन मात्र से मेरा उद्धार होगया। जन्म लेने का फल मुझे मिल गया।"

तेरी सँगत एक क्षण की जप से तप से बढ़ के है।
जा कहीं, तुझको न डर है और किसी का है न भय॥

स्वर्ग मे अपवर्ग में वह सुख कभी मिलता नहीं।
जो है सुख सतसंग में उसकी है क्या उपमा कहीं॥

"ऐ हनूमान! तेरे लिये मित्र, शत्रु सब समान हैं। विष भी खाइगा तो वह तेरे लिये अमृत हो जायगा। जिस पर तू दृष्टि डालेगा, वह तेरे, वशीभूत हो जायेगा। यह सब महिमा राम की है जिन्होंने ब्रह्म का अवतार धारण किया है। जिस पर उनकी कृपा है, उसको कौन हानि पहुँचा सकता है।"

अणिमा मुद्रा ने फिर काम दिया। छोटा रूप बना कर यह नगर में आये, घर घर में गये। दिन का समय था लेकिन सब अभी तक सोये पड़े थे। सभ्य देशी अब भी बहुधा दिन को सोते और रात को काम करते हैं। यही कारण है कि वह निश्चर (रात की चर्या करने वाले) कहलाते हैं। उन में दिनचर (दिन की चर्य्या करने वाले) कम होते हैं। यह उसी भेष में रावण के महल में गये। वह माँस मदिरा पान करके पांव पसार कर सोरहा था। और भी सब नींद में थे। रखवाली करने वालों ने इनको नहीं देखा और देखा भी होगा तो किसी ने ध्यान तक नहीं दिया।

लघु बनने में सुगमता, लघिमा अणिमा एक।
महिमा गरिमा कठिन गति, सूझे नहीं विवेक॥
दीन दुखी लौ लीन पर, प्रभु की दया अपार।
गर्भज्ञान को दुख महा, प्रभु है गर्भ अहार॥
लेने को सत नाम है, देने को अनदान।
तरने को है दीनता, बूड़न को अभिमान॥

किस से पूछे गछें! कोई नहीं मिला। राम की दया ने इनको खींच कर एक महल के समीप पहुँचा दिया। पाँव आप ही आप उधर पड़ने लगे। यह नई बात नहीं है। ऐसा होता

है और मनुष्य अनजान बना हुआ अपने मन्तव्य की ओर आप खिंचा हुआ चला जाता है। तुम कुछ न करो। चित्त की वृत्तियों की रोक थाम में लगो। आप ही सब कुछ होने लगेगा और तुम को आश्चर्य न होगा।

तीसरा समुल्लास

हनुमान और विभीषण

यह घर जिसकी ओर उनका पाँव आप ही आप पड़ रहा था, विभीषण का महल था। यह देखते भालते हुये उस में पहुँचे। और तो सब अभी नींद में थे, विभीषण जाग रहा था। इन्हें देख कर आश्चर्य हुआ। अपने आपको उस पर प्रगट किया और अभय होकर उसके पास गये।

हनूमान--"भाई ! निश्चरों के बीच में तुम दिनचर कैसे हो ?"

विभीषण–"तुम कौन हो, कहाँ से आये हो ? अन्य देशी हो, यहाँ के रहने वाले नहीं हो !"

हनूमान-"प्रश्न पर प्रश्न ! मेरे प्रश्न का उत्तर तो दिया नहीं आप ही प्रश्न कर बैठे। सुनो, राम ने ब्रह्म का अवतार धारण किया है। मैं उनका दूत हूँ। दिनचरों की भलाई और निश्चरों की बुराई के निमित्त आया हूं। तुम निश्चरों में दिनचर प्रतीत हुये इसलिये तुम्हारे पास आगया, नहीं तो और जगह चला जाता।"

रवि कुल रवि का बंस है, दिनकर उनको जान।
निशिकुल निशि का अंश है, निश्चर की पहिचान॥
तत सवितुर्वरेण्यम, यह गायत्री मंत्र।
जो रहस्य को प्राप्त हो, उसे दिखाऊँ तंत्र॥

ओ३म् कहा भू भुवः तजा, तज दिया स्वः का ध्यान।
वह सवितुर का भक्त है, उसका है कल्यान॥
रघु रवि-कुल के वंश में, राम लिया अवतार।
जो कोई दिनचर बने, गायत्री अधिकार॥
कर 'भर्गो देवस्य धी मही, धारे रवि का ध्यान।
राम भक्त इसको समझ, वह पावे निर्वाण॥
धियो योन प्रचोदयात, गायत्री का सार।
दिनचर निः संदेह तू, महिमा अगम अपार॥

(नोट) गायत्री मंत्र सम्पूर्णः ओ३म् भूर्भुवः स्वः, तत सवितुर्वरेणियम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनःप्रचोदयात्"

बिभीषण उठा, हनूमान से मिला। इन्होंने छाती से लगा लिया। विभीषण बोला-"मैं विभीषण रावण का छोटा भाई हूँ। डरा, सहमा रहता हूँ। इस डर के कारण मेरा नाम ही विभीषण हो गया। ('वि'-बड़ा 'भी' डर-भय) जैसे बत्तीस दांतों के बीच में जिभ्या (ज़बान) रहती है, वैसे ही मैं यहाँ लंका में रहता हूं। राम ने बड़ी दया की कि तुमको यहां भेजा। बिना हरी की कृपा के संतों का दर्शन नहीं होता। तुम ने सच कहा-निश्चरों में दिनचर कम होते हैं। मैं आज कृतार्थ होगया। तुम्हारे दर्शन-मात्र के संग से मुझे विवेक आगया। सतसंग की महिमा गुप्त नहीं है लेकिन राम की कृपा के बिना उसकी उपलब्धि भी महा कठिन है। तुम्हारा नाम क्या है?" हनुमान-'मुझे सब हनुमान कहते हैं। मैं जाति का बानर हूँ। सवेरे कोई मेरा मुंह देख ले या मेरा नाम ले ले तो दिन भर उसे आहार नहीं मिलता। राम ने दया की मुझे अपना सबसे छोटा सेवक बनाया। वह कृपालु दयाल हैं, सर्व समर्थ हैं, जो चाहें कर सकते हैं।"

जो चाहें तो पर्वत को राई करें।
जो राई हो पर्वत बनाकर रहें॥
उन्हीं की है लीला उन्हीं की दया।
उन्हीं की कृपा से यह सब कुछ हुआ॥
हनूमान को अपना सेवक किया।
उसे बुद्धि बल और साहस दिया॥
यहां आया लंका में होकर निडर।
मिला तुमको दिनचर समझ बूझ कर॥
जो दिनचर हो सवितर का ध्यान दो।
इसी में भलाई हो अब कल्यान हो।

विभीषण–'तुमको मैं अपने घर में ठहरा तो सकता हूँ लेकिन रावण के गुप्त दूत घर घर २ में रहते हैं। मैं डरा हुआ हूं, रोकने और ठहराने का साहस नहीं कर सकता। खाओ, पाओ, थोड़ी देर बैठकर वहाँ से रास्ता लो। और जो सेवा कहो और मुझ से बने तो मैं त्रुटि न करूँगा।"

हनूमान–'मैं तुम्हारी दशा को समझता हूँ। यहां रह नहीं सकता। न खाना पीना चाहता हूँ। हाँ, तुम मेरी कुछ सहायता कर सकते हो तो वह केवल इतनी ही है कि मुझे बतादो कि रावण ने सीता को लेजा कर कहां रक्खा है। मैं उससे मिलना चाहता हूँ।"

नहीं जीव जन्तु वहां जायेंगे।
जो जायेंगे तत्तक्षण वह फल पायेंगे॥
बड़ी चौकसी है, बड़ा है प्रबन्ध।
किसी की नहीं उस जगह होती सन्धि॥

"हाँ! इतना पता देता हूं कि सीता अशोक वाटिका में रहती है। जैसे तुम यहाँ तक आगये, अपनी ही युक्ति शक्ति और बल बुद्धि से वहाँ जासकते हो। अशोक वाटिका नगर के

दक्षिण में है। वह बहुत दूर नहीं है। मैं तुमको पग २ का पता दिये देता हूं। छुप छुपा कर वहां जाओ, उससे मिलो और अपना काम करो।"

विभीषण ने सारा चिट्ठा खोल कर सुना दिया। घर के भेदी से क्या बात छुपी रहती है। कहावत है "घर का भेदी लंका ढावे" और विभीषण पहला निशाचरी दिनचर था जिसने हनूमान को लंका का कच्चा चिट्ठा सुनाया। गुप्त भाँड़े को फोड़ फोड़ कर दिखा दिया और हनुमान उससे विदा होकर अशोक वाटिका की ओर चले।

चौथा समुल्लास

हनूमान और अशोक वाटिका

अन्य देशों में उसी देश का भेष धारण करलो तब तो कुशल है, नहीं तो पूछा पेखी होने लगती है, आपत्ति सिर पर आजाती है और काम में बाधा होती है। हनूमान ने फिर छोटा भेष बनाया। उछलते फाँदते हुये वहां पहुंचे जहां अशोक वाटिका थी। अशोक के सिवा वहाँ और कोई वृक्ष भी नहीं था उसमें पत्ते ही पत्ते रहते हैं न फल न फूल। हां! छाया निस्सन्देह घनी रहती है और ठंडक का लाभ होता है।

यह उछल कर उस पेड़ पर चढ़ गये, जिसके नीचे सीता बैठी हुई थी। साधारण वृति! क्रोध न मोह! तपस्या की मूर्ति! हृदय में नाम का ध्यान!

वही उसका साथी वही संग था,
वही रूप मन में वही रंग था।

हनूमान ने मन ही मन में नमस्कार किया और चुप चाप पत्तों की ओट में बैठकर सोचने लगे। देखें सीता के साथ

यहाँ क्या वर्ताव होता है। इतने में वहां रावण आया, सीता ने उसी समय अपना मुंह उसकी ओर से फेर लिया।

रावण ने कहा—"अब तक तुझे मेरे बल और पराक्रम का ध्यान आया या नहीं ? या वही दशा है ?"

सीता बोली—"चल परे हट ! तेरे बल और पराक्रम का तो उसी समय पता लग गया था जब अकेले बन से तू मुझे हर लाया था। गीदड़ के समान गया, चोरी की और सिंह की स्त्री को उठा लाया। बल होता तो राम के साथ युद्ध करता। पापी ! तुझ में न लाज है न मर्यादा का ध्यान है और मुझे अपने बल और पराक्रम का भय दिखलता है।"

रावण—"तू मेरा कहना मान जा ! मैं तुझे लंका की रानी बनाऊँगा।"

सीता—"कुछ दिनों में यह तेरी सोने की लँका मिट्टी में मिल जायेगी और जब राम लक्ष्मण के सनसनाते हुये बाण चलेंगे, तुझे कोई शरण तक न देगा, छुपता फिरेगा और वह बाण तेरे कलेजे को चीरते हुये तेरा लहू पीयेंगे और तू कुत्ते की मृत्यु मरेगा।"

रावण हँसा—'तपस्वी और रावण का सामना करे ! न आंखों देखा, न कानों सुना।"

सीता—"देखा न हो, कानों से तो सुन रक्खा है। तेरी नककटी और कन कटी बहन सूर्पणखां खरदूषण और त्रिशरा तेरे भाइयों को बुला लाई और वह एक एक करके मर मिटे। अब तेरी बारी है और तू बच नहीं सकता। मेरा समाचार मिला नहीं कि राम यहाँ आपहुँचेंगे और तुझे इस पाप कर्म का दण्ड दिये बिना न रहेंगे।"

रावण—"एक तो दुबले पतले मनुष्य ! दूसरे तेरे वियोग

में दुखी। तीसरे मेरे भुज बल का भय! चौथे न उनका कोई साथी न सहाई! मुझे देख! मेरी लंका को देख! मेरी सामिग्री और सेना को देख! वह दो लड़के मेरे साथ क्या लड़ सकते हैं।"

सीता—"मैं ऐसे घोर पापी का मुंह देखना नहीं चाहती। तुझमें इतनी सामर्थ्य थी तो गीदड़ क्यों बना? सामना करता! एक अबला स्त्री के सामने अपने बल पौरुष की प्रशंशा करता है। तुझे लाज नहीं आती। शूरवीर और योद्धा बना हुआ है।"

रावण—

बात को मान जा बातें न बना बात को सुन।
तुझको क्या होगया जो राम लक्ष्मण की धुन॥

सीता—

हैं रत्न राम और वह रत्नों में बहु मूल रतन।
उन के जैसा कहाँ, जग में है कहाँ नर भूषन॥
लक्ष्मण राम के भाई हैं, सहाई सेवक।
चल परे हट नहीं भाती तेरी मुझको बक बक॥

रावण—"एक बार मुझको देख, मैं इसी को तेरी कृपा समझूँगा।"

सीता—"जिसने सूरज का दर्शन कर लिया है, वह जुगनू को क्या देखे। जिसकी दृष्टि में हाथी आगया है, वह ताल की मेंढकी पर क्या आँख डाले। सिंह का साथी गीदड़ को देखकर अपमान क्यों करे।"

रावण—"सीता! तूने तपस्वियों के ध्यान में मेरा सन्मान नहीं किया। मैं देखूँगा कब तक तू हट पर तुली हुई है। एक महिना तक मैं चुप रहूंगा। यदि इसके अंदर तूने मेरी बात नहीं मानी, तो अपनी तलवार से तेरा सर काट डालूँगा।"

सीता—"बस. इसी को तूने अपनी वीरता की सीमा समझ रक्खी है ! तू ने मुझे क्या समझ रक्खा है ! मेरा प्राण तो अब भी वहां ही है, जहाँ राम के चरण कमल हैं। यहाँ यह अधम शरीर पड़ा है। यह आप मरा हुआ है। तलवार उठा और अपना काम कर। मैं कब इस अपवित्र भूमि में रहना चाहती हूँ।"

रावण ने फिर बहुत कुछ समझाया। उसे रानी बनाने की लालच दी। वह उसकी फुसलाहट और गीदड़ भभकी के भरें अर्रे में कब आने लगी थी। अन्त में सीता ने कहा—

राम तन में मेरे बसते हैं, बसे हैं मन में,
चाहे मैं घर में रहूँ चाहे रहूं मैं बन में।
दूर हो दूर आँखों से परे जा मेरे,
पापी अभी एक ही पल क्षण में हट परे॥

वह खिसियाना और लज्जित होकर वहाँ से चला गया।

त्रिजटा—(तीन जटाओं वाली) एक राक्षसी सीता की सेवा में रहती थी। उसे इसके साथ प्रेम था। सीता को देख कर वह पास आ बैठी। कहने लगी-"देवी ! धैर्य्य धरो ! इस पापी रावण के सिर पर पाप गूंज रहा है। मृत्यु मँडला रही है। राम अवश्य आते ही होंगे और आकर बदला लेंगे।"

सीता बोली—"न जाने वह दिन कब आयेगा !"

त्रिजटा—"मैंने कल रात स्वप्न देखा। एक बन्दर लंका में आया। उसने नगर को जला कर भस्म कर दिया। वह जाकर राम को लाया। राम ने रावण को मारा और तुझे अपने देश को ले गये।"

सीता—"अब यह वियोग का दुख नहीं सहा जाता। तू मेरे साथ हित रखती है, तो चिता बना कर मुझे उस पर बिठा

दे और आग लगा दे। मैं जल कर राख हो जाऊँ। अब जीना नहीं चाहती।"

त्रिजटा—"यह मुझ से नहीं होगा। मैं तुझे उस समय तक अपनी आंख की पुतली बना रक्खूंगी जब तक राम आयेंगे।"

सीता—"अच्छा! अब चलीजा। मुझे एकान्त मिले।" वह चली गई। सीता अकेली रह गई।"

सीता ने आकाश की ओर आँख उठाकर कहा "चाँद! तू आग का अंगारा बन कर नीचे उतर आ और मुझे जलादे।" चाँद कब अंगारा होकर नीचे उतरने लगा था! सीता ने तारों से कहा—"तुम हवन-कुण्ड की दहकती हुई वेदी के समान जगमगा रहे हो। ऊपर से मुझ पर आग वर्षा दो। मैं जल भुन कर भस्म हो जाऊँ।" तारे कब उसकी सुनने वाले थे। वह बहुत व्याकुल होगई। जिस वृक्ष के नीचे बैठी हुई थी, इससे बोली—"अशोक! वृक्ष की डालियों की रगड़ से आग उत्पन्न हो जाती है। इस समय ऐसा ही हो। तेरे पत्तों से आग की चिनगारियां झड़ कर मुझे जला दें और मैं अशोक हो जाऊँ।"

यह शब्द सीता के मुँह से निकले ही थे कि पत्तों में छुपे बैठे हुये हनूमान ने राम की चमकती हुई अँगूठी नीचे गिरादी। वह जगमगाती हुई सीता के समीप आकर गिरी। इसने उसे आग की चिनगारी समझी। झपट कर उठाई। वह अँगूठी निकली। चाँदनी खिली हुई थी। ध्यान से देखा। वह राम की अँगूठी निकली और उस पर राम का नाम खुदा हुआ था।

"हाय! यह कहाँ से आगई! क्या किसी राक्षस ने राम को मार कर इसे छीन लिया और मुझे दुखी करने के लिये इसे यहां फेंक दिया।"

"नहीं, नहीं ऐसा हो नहीं सकता। राम अजर अमर अविनाशी हैं उन्हें कोई नहीं मार सकता।"

"फिर यह अँगूठी क्यों और कैसे यहां आई! क्या इसमें कोई राक्षसी लीला गुप्त है? यह रहस्य मेरी समझ से बाहर है।" "ऐ राम के प्यारे हाथ की अंगूठी! तू मुझे बहुत प्यारी है। क्या तू उड़ कर मुझे राम के आने का संदेशा सुनाने आई है? राम कहां हैं? कैसे हैं? क्या कर रहे हैं? अपनी सीता की सुध कैसे भूल गये हैं?"

यों विचार करती सीता रो पड़ी।

बतादो राम आकर इस घड़ी, किस जगह और कहाँ तुम हो।
मुझे पास अपने लेजाओ, वहाँ बसते जहां तुम हो॥
दुखी हूँ जी विकल है, चित्त मेरा घेरा है चिन्ता ने।
सुध आके लेते ले चलो, मुझको जहां तुम हो॥
कहा करते हैं व्यापक राम हैं, संसार में निश दिन।
कहूं मैं कैसे बिन देखे, यहां तुम हो वहां तुम हो॥

रोती थी और गाती थी। वह बावली बन गई थी। हनुमान उसके दुख को न सह सके। वृक्ष की शाखा पर बैठे हुये राम रटन की धुन गा उठे।

राम चैतन्य मूर्ति हैं सब के नायक राम हैं।
जग के माता और पिता हैं जग के सहायक राम हैं॥१॥
राम में विश्राम पद है राम ही में शान्ति।
राम में है ज्ञान मुक्ति, राम में निर्भ्रान्ति॥२॥
राम व्यापक जगत में हैं बोलो मुख से राम राम।
राम को भूलो नहीं, है राम ही में सुख का धाम॥३॥
राम का लो आसरा और राम का हो मन में ध्यान।
राम है सूत्रात्मा और राम ही है सब के प्राण॥४॥
राम कहले राम भजले, राम को जप राम राम।
राम हैं मुक्ति भजन जप, जोग मुक्ति सुख के धाम॥५॥

"कहाँ से यह शब्द आ रहा है ?" इधर देखा उधर देखा कोई दिखाई नहीं दिया।

तब सीता ने कहा-"ऐ इस प्यारे राम नाम के सुनाने वाले ! तू आकाश से यह चित लुभाने वाली आकाश वाणी सुना रहा है। प्रगट क्यों नहीं होता ? मैं राम के सुपुत्र भक्त का दर्शन करूँ। मेरे कलेजा को ठंडक हो, छाती शीतल हो और मेरी जलती और तपती हुई आँखों को तरी पहुंचे।"

हनुमान उसी समय छोटे बंदर के रूप में लद से नीचे कूद पड़े।

पाँचवाँ समुल्लास

हनुमान और सीता

छोटा बन्दर, काला मुँह ! चमकती हुई पलक ! भांजती हुई पलकें ! टेढ़ी तुम ! सीता डरी, सहमी और मुँह फेर लिया-"अरे यह कौन है ? कहां से आगया ? यह कैसे आकाश से गिरा ? किसने इसे मेरे पास भेजा ?"

हनूमान ने कहा—माई ! मैं बानर हूं। राम का दूत हूं। बन से आया हूं। राम ने तेरे पास भेजा है। जान पहिचान कराने के निमित्त अंगूठी दी कि तुझे मेरा विश्वास हो"

सीता ने इनकी तरफ मुँह किया। ध्यान से बन्दर का रूप देखा। या तो वह वियोग में तड़फ रही थी या इन्हें देखकर मुस्कराई। 'नर और वानर की मित्रता कैसे हुई ?'

हनूमान-"वानर भी नर के आकार के हैं। वानर कहते हैं उसे जो नर के समान हो। सारे पशु पक्षियों की उपेक्षा वानर नरों से मिलते जुलते हैं।"

सीता—"वानर के पूंछ होती है, नर के कहाँ होती है ?"
हनूमान—"पहिले होती थी, अब नहीं होती है। यह पूंछ ही तो बावन भगवान का तीसरा पांव है जो उनकी पीठ की रीढ़ या मेरु दण्ड की हड्डी के नीचे मूलाधार से निकला हुआ था। इसी से उन्होंने बलि की प्रार्थना पर अन्तरिक्ष की माप की थी।"

सीता—"फिर यह पूंछ कहाँ चली गई ?"

हनूमान—"कटते कटते कट गई। मनुष्य इससे घृणा करने लगा। वह दूर होती गई। उसका आकार अब भी मेरु दण्ड के सिर पर दिखाई देता है। मनुष्य की इच्छा में बड़ी प्रबलता है। जो चाहता है वही हो जाता है। मनुष्य दाढ़ी बनवाने लगा है। कुछ दिनों पीछे यह भी इसके मुँह पर न रहेगी।"

सीता—"बन्दर ! तू तो बड़ा पंडित और बड़ा ज्ञानी है।"

हनूमान—"राम की कृपा से सब कुछ होता है। यह आश्चर्य जनक बात नहीं है।"

राम चाहें तिनके को ब्रह्मा करें।
राम चाहें प्रजा को राजा करें॥
राम में सिद्धि है निद्धि शक्ति है।
राम ही से योग साधन मुक्ति है॥
राम दाता है, विधाता जानकी।
राम सबके पिता माता जानकी॥
राम की बातें निराली हैं सभी।
मैंने उनको देखी भाली हैं सभी॥
मैं न ज्ञानी हूँ न मैं अवधूत हूँ।
राम का सेवक हूँ और निज दूत हूँ॥

सीता—"यह सब सच है। मित्रता कैसे हुई ?"

हनूमान ने सारा वृतान्त सुनाया—"सुग्रीव से मिल कर

एक बाण से राम ने वाली को मारा। उसके लाखों सेवक बन और पर्वतों में तेरी खोज कर रहे हैं। मैं इधर आया, तेरा दर्शन पाया। अब राम को जाकर तेरा समाचार सुनाऊँगा।"

सीता का हृदय भर आया। आंखों से आँसू निकल पड़े—

राम ने मुझको विसारा हाय हाय।
मैंने उनका क्या बिगाड़ा हाय हाय॥
उनका था मुझको सहारा हाय हाय।
मुझको दुख आपति ने मारा हाय हाय॥
रात दिन कहती हूँ मन मे हाय राम।
कष्ट दुख सहती हूँ मनसे हाय राम॥

हनूमान- 'माई। राम को तुम्हारे विरह का वियोग तुम से कहीं दूना है। वह तो बाबले से बन गये हैं। दोनों भाई जीते जागते कुशल पूर्वक हैं। तुम चिन्ता न करो। मेरे लौटने की देर है। जहां मैं गया, राम बन्दरों की सेना लेकर लंका पर चढ़ आयेंगे और रावण को मार कर तुझे ले जायेंगे और जगत में उनकी यश और कीर्ति का गीत गाया जावेगा।"

सीता को ढारस बंधी। फिर भी कह उठी—"बन्दरों की सेना में तुम्हारे ही जैसे हैं कि कोई बली भी हैं।"

हनूमान ने अपने मन को एकाग्र कर के महिमा और गिरिमा मुद्रा का भाव भर लिया और देखते देखते पर्वताकार हो गये। "क्या कहूं। राम की आज्ञा नहीं है, नहीं तो मैं अकेला रावण को मारकर तुझे समुद्र के पार लेजाता। कुछ दिनों के लिये धीरज धरो। अब राम के आने में देर न लगेगी।" यह कह कर हनूमान फिर छोटे बन्दर बन गये।

सीता प्रसन्न होगई। "राम तुम पर दया करें, अपनी अटल भक्ति दें! तुम अजर अमर अविनाशी बनो।"

हनूमान बोले—"आज मेरा जन्म सुफल हो गया, अँजनी (आकाश जिसने पुत्र नहीं जना, क्वारी) का कोख आज पवित्र हो गया। माई ! कई दिन हो गये मैंने कुछ खाया पिया नहीं, भूका प्यासा हूँ।"

सीता-'मेरे पास क्या है, जो तुम्हें दूँ। इस अशोक बाटिका में फल फूल तक नहीं हैं वह कारागार है। रावण ने ऐसा प्रबंध कर रक्खा है। इसमें फलने वाले वृक्ष न लगाये जायें और बंधियों (कैदियों) को फल फूल खाने तक का अवसर न मिलै। हां, इसके आस पास उसकी अनेक वाटिकायें हैं जिनकी रखवाली राक्षस माली बड़ी चौकसी से करते हैं। हो सके तो इन में जाकर अपना पेट भरो।"

हनूमान—"इनका मुझे किंचित भय नहीं है, तेरी आज्ञा चाहता हूँ।"

सीता—"जाओ, राम का बल हृदय में रख कर अपना काम करो।"

हनूमान ने नमस्कार किया और कूदते फांदते वहां से चल खड़े हुये।

छटा समुल्लास

राज वाटिका में उत्पात

हनूमान रावण की राज वाटिका में आये। कुछ फल खाये कुछ तोड़ गिराये। कच्चे पक्के फलों का कई जगहों में ढेर लग गया। पेड़ भी उखेड़ कर बखेर दिये। डालियों और टहनियाँ, पत्तों और फूल तोड़ तोड़ कर इनके टीले बना दिये।

रखवाली करने वाले माली दौड़े। धनुष बाण, गुलेल, ढेल बांस से काम लेने लगे। यह कब इनकी मानते थे। न किसी का बाण लगा न ढेला लगा। यह शाखों पर शाखा तोड़ तोड़ कर इनको मारते और इन पर डालियां फेंकते। एक अकेला बन्दर और इतने रखवाले! कोई सुनेगा तो क्या कहेगा! यह लज्जित हो हो कर उन्हें मारने लगे। यह भी उन पर डालियाँ तोड़ तोड़ कर फेंकते गये। कितने ही माली कुचल कर मरे, कितने ही घायल होकर भागे। रावण के पास आये—"महाराज! एक विचित्र बन्दर अशोक वाटिका के पास वाले राज बाग में आया है। उसने उसका नाश कर दिया। पेड़ उखाड़ डाले। डालियां तोड़ डालीं। मालियों ने गुलेल आदि से काम लिया। किसी की कुछ नहीं चली। बहुत माली पेड़ों से दब कर और कुचल कर मर गये।"

रावण ने अपने बेटे अक्षय कुमार (अक्षय जिसे कोई न जीत सके) को भेजा—"देखो तो सही! यह कैसा बन्दर है जिसने मालियों का नाक में दम कर दिया। देशी है या अन्य देशी है।"

राज कुमार आया—"धनुष बाण को सँभाला भी नहीं था कि अँजनी का पुत्र गरजा। तड़प कर इसके सिर पर आ गया। नोंचा, खसोटा, काटा, घायल किया और लातों से मार मारकर उसका कचूमर निकाल दिया और उस अक्षय कुमार की क्षय (मृत्यु) आ गयी। उसके कई साथियों को भी हनूमान ने मल दल कर रोंद डाला और वह मिट्टी में मिल गये।

रावण को समाचार भेजा गया। वह सुन कर अपने सुयोग्य और सब से बलवान पुत्र मेघनाद (बादल के समान गर्जने वाले) को इस के दण्ड देने के निमित्त भेजा। यह लँका में सबसे बड़ा तान्त्रिक (मन्त्र जानने वाले) मंत्रिक (मन्त्र

साधन करने वाला) और मायावी (साइँस जानने वाला) था।

इसे देख कर हनूमान फिर गरजे। एक पूरा वृक्ष उखाड़ कर उस पर आक्रमण किया। कई राक्षस उससे दब कर मरे। मेघनाद सँभला रहा। हनूमान उस पर झपटे। नख दांत और हाथ पांव से उसे बेवस कर दिया और ऐसा घूंसा लगाया कि वह पृथ्वी पर गिरा, मूर्छा आगई। यह दँनदनाते और कूदते फांदते हुये फिर वृक्ष पर चढ़ गये।

मेघनाद सचेत हुआ। उसने बहुत कर, बल, छल से काम लिया। हनूमान अँजनी (आकाश) पुत्र थे। मारुति कहलाते थे। आकाश तत्व क्या होता है, इसकी समझ अब तक किसी को नहीं आई। यह सारे बलों और शक्तियों का भँडार है। यह उससे बचते ही रहे। अंत में उसने ब्रह्मबाण हाथ में लिया और ओ३म् भूर्भुवः स्वः के गायत्री मन्त्र को पढ़ कर उस पर चलाया। हनूमान ने सोचा—'राम का अवतार मर्यादा के स्थापन करने के लिये हुआ है। मैं ब्रह्म बाण का अपमान करता हूं तो मर्यादा भंग होती है" बाण के लगते ही वह पृथ्वी पर गिरे। मेघनाद ने उन्हें नाग फांस से बाँध लिया। जान बूझ कर बँध गए। लड़ने नहीं आए थे। सीता की सुध लेने आये थे। यह लड़ाई इनकी लीला मात्र थी और इसमें इन्होंने अपने काम निकालने की युक्ति देखी।

बँधे, बँध गये। राक्षस सुखी हुये। भीड़ लग गई। कौतुक देखने के लिये नगर का नगर टूट पड़ा।

संसार विचित्र स्थान है। कोई नई बात होने दो, लाखों मनुष्य एकत्रित हो जाते हैं।

इनको फाँस में फाँसे हुये निश्चर रावण की सभा में लाये।

सातवां समुल्लास

हनूमान-रावण

सभा लगी हुई थी। सब मन्त्री, दीवान, सेनापति, कोषाध्यक्ष और राज कर्मचारी अपने अपने पद के अनुसार बैठे थे। सब चुप चाप! सुई पृथ्वी पर गिरे और इसका शब्द सुनाई दे जाय, ऐसी दशा थी।

रावण का दरबार इन्द्र के दरबार से कम न रहा होगा। संसार भर में उसका नाम ही सुनकर सब अपने कानों पर हाथ धर लेते थे।

हनूमान अभय थे—"इनको देख कर रावण मुस्कराया। फिर अक्षयकुमार की मृत्यु का स्मरण हुआ, क्रोध आगया।

रावण बोला—"तू कौन है?"

हनूमान—"बन्दर हूँ।"

रावण—"मेरे बल और पराक्रम को नहीं जानता?"

हनूमान—"बहुत अच्छी तरह जानता हूँ।"

रावण—"किस के बल से तू लंका आया और राज बटिका को हानि पहुँचाई?"

हनूमान—"मुझ में तुझ में और सब में उसी का बल है जो बल-पति कहलाता है। जिसकी आज्ञा से माया ब्रह्माण्ड को रचती है, जिसकी प्रेरणा से ब्रह्मा जगत को उत्पन्न करता, विष्णु पालता और शिव संघारता है। जो अखिल ब्रह्माण्ड में व्यापक है, जिसने शिव का धनुष तोड़ा और खरदूषण और त्रिशिरा को मृत्यु के घाट लगाया, मैं ने उसी का बल लेकर लँका में प्रवेश किया। यह तेरा बल नहीं है, उसी का बल है जिसके प्रताप से तूने चराचर जगत को जीतकर वशीभूत कर रक्खा है।'

रावण चुप रहा।

हनूमान फिर बोले—'और मैं तो पहिले ही से तेरे बल और पराक्रम से सचेत हूं। तू ने सहस्रबाहु और बाली के साथ युद्ध किया था। उसका यश और उसकी कीर्ति सारे संसार में फैली हुई है।'

रावण ने पते पते की बातें सुन कर हनूमान को हंसी में उड़ाना चाहा। प्रसंग को पलट दिया। 'तू ने मेरी वाटिका को क्यों उजाड़ा? उसने तुझ को क्या हानि पहुँचाई थी?'

हनूमान—"मैं भूका था, भूक लग आई थी। फल तोड़ा, खाया, कुछ मेरे पेट में गये, कुछ पृथ्वी पर गिरे। डालियों पर चारों ओर हाथ पड़े वह बोझिल होकर गिर पड़े। और यों मैं बन्दर हूं तोड़ फोड़ करना मेरा स्वभाव है। तेरे मालियों ने मुझे मारा। मैं ने भी उनको मार दिया। इस संसार में कौन ऐसा है जो सुरक्षा नहीं करता। यह सब प्राणियों का गुण है। इस पर तेरे पुत्र ने मुझे बांध लिया और यहाँ सभा में घसीट लाया।"

रावण—"तू बंध गया, बंधुआ हो गया।"

हनूमान—"मुझे ऐसे बंधने बंधाने की लाज नहीं। अपने स्वामी के कार्य्य की निमित्त सेवक क्या नहीं करता! मैं यहां काम करने आया। बंध गया, तो बंध गया। इस से क्या हुआ! मैं तुझे सिखाने पढ़ाने और उपदेश देने आया हूँ। जिसके भय से सारा संसार भयभीत रहता है उससे तुमने बैर ठान रक्खा है। यह अनुचित कर्म है। सीता जी को लौटा दे। राम की शरण में आजा। वह शरणागत की रक्षा करते हैं। शरण में आये हुये प्राणियों को दण्ड नहीं देने।"

रावण—"और भी कुछ कहना है कि बस।"

हनूमान—"जो कुछ मुझे कहना था कह चुका।"

हाथ वह अच्छे ! रहें जो पुन्य में और दान में।
मन वह अच्छा है जो हो हरि के भजन और ध्यान में॥
आंख वह अच्छी है जिसमें प्रेम की दृष्टि रहे।
मुंह वह अच्छा, सद वचन और मीठी बातें नित कहे॥
पांव वह अच्छे चलें जो पंथ के उपकार में।
कान वह अच्छे जो हरी के कीर्तन की धुनि सुनें॥
जो नहीं हिंसक वह धर्मात्मा का रूप है।
जो प्रजा पालक हो भला जगत में वह भूप है॥
राम बन में थे, हरी सीता को यह अनुचित किया।
कर्म यह दुष्कर्म अपयश इसको करके क्यों लिया॥
दूत हूँ मैं राम का तुमको जताने आया हूं।
धर्म का रस्ता है अच्छा यह बताने आया हूँ॥
जानकी दे राम को भय नहीं चिन्ता नहीं।
चित है निरमल जिसका इसमें दुमति दुविधा नहीं॥
तुम ऋषि संतान विद्वान और कुलमान हो।
काम ऐसे करना जिसमें सद्गति कल्यान हो॥

रावण—"वाह वाह ! यह बन्दर क्या है ! यह बड़ा विवेकी और ज्ञानी ऋषि है। यह तो लंका में मेरा गुरू बनने आया है। दुष्ट ! राज सभा में आकर मुझे ऐसी बातें सुनाने का साहस कैसे हुआ ! निःसंदेह तुझे तेरी मृत्यु यहाँ ले आई है। क्या यहां कोई ऐसा निश्चर नहीं है जो इसी समय इसको मार कर खा जावे ! छोटा मुँह बड़ी बात !"

राक्षस उठे। तलवार और बरछा और फरसा उठाया। हनूमान बँधे और जकड़े हुये खड़े थे, मुस्कराते और हँसते रहे। अभय थे। मन में किसी प्रकार की शंका नहीं थी। सम्भव था कि राक्षस इन पर हाथ उठाते कि विभीषण रावण का छोटा

भाई उस समय सभा में आगया। हाथ और दृष्टि के संकेत से इन्हें उस दुष्कर्म से रोक लिया।

आठवाँ समुल्लास

हनूमान और लंकादहन

विभीषण ने आकर रावण को नमस्कार किया। आज्ञा लेकर अपनी जगह पर बैठा। रावण ने कहा—"यह बन्दर यहाँ आया है। कहता है मैं राम का दूत हूं। इसने राज वाटिका को उजाड़ दिया और कई निशाचर इसके हाथ से मरे। तुम्हारा भतीजा अक्षयकुमार भी इसी के हाथ से मारा गया। मैं चाहता हूं इसे मृत्यु दंड दिया जाये। तुम क्या कहते हो?"

विभीषण ने उत्तर दिया—"जो आपने आज्ञा की है उसके विरुद्ध कोई क्या कह सकता है। हाँ, यह दूत है, दूत के रूप में आया है, दूत का मार डालना राजनीति के विपरीत है। आप इसे और दण्ड जो चाहें दें। नीति विरुद्ध कोई काम न हो।"

रावण ने कहा—"बहुत अच्छी बात है। बन्दर को अंग भंग करके यहाँ से जाने दो।"

सभा में मंत्र देने वाले बहुत होते हैं। किसी ने कुछ कहा किसी ने कुछ कहा। एक निशाचर बोला—"इसकी पूंछ में आग लगादो। पुंछ कटा होकर जाय।" मंत्र सब को भाया। उनकी पूंछ में बहुत कपड़े लत्ते लपेटे गये और तेल से भिगो दिया गया। वे मुस्करा रहे थे और मन ही मन में कह रहे थे कि यह सरस्वती देवी की दया है जो इनके मन को प्रेरणा कर रही है।"

पूंछ को लम्बी चौड़ी बनाया गया। उसे बांस की खमाची से जोड़ जोड़ कर कई हाथ लम्बा किया गया और कपड़ों की मोटी तह जमा कर मन माना तेल दिया गया। इस कौतुक को देखने के लिये सारा नगर ठठ का ठठ उमड़ आया। सब हँसते मुस्कराते और खिल्ली उड़ाते थे।

जब यह सब हो चुका, पूंछ में आग लगादी गई और हनूमान को छोड़ दिया गया। आग बढ़ी। यह उड़े, ऊँचे ऊँचे मन्दिर और घरों पर चढ़ गये। सबको आग लगा दी। सबके सब जल उठे। उसी समय प्रचंड वायु बहने लगी। आग फैली और सारा नगर जलने लगा। यह इधर से उधर और उधर से इधर चक्कर लगाते हुये सारे घरों को जलाते फिरे। विभीषण ने इनको पहिले ही से रावण के हथियार घर, वायु घर, बिजली घर, भाप घर, बारूद घर, गंधक घर आदि का पता दे रक्खा था। यह सब के सब लंका के रक्षा की सामिग्री थे। सबको आग लग गई। बारूद उड़ी, गोले फूटे, बिजली भड़की, पानी फैला, वायु चली। जितने कला कौशल के कार्यालय थे जलने लगे। सब जगहों से, तड़ाके और गर्ज के शब्द आने लगे और गूँजने लगे। नगर का नगर देखते देखते भस्मी भूत हो गया और जो लोग कौतुक देखने और खिल्ली उड़ाने आये थे रोने पीटने सिर धुनने और पछताने लगे।

कोई कहता था यह बन्दर नहीं था, देवता था। लंका को जलाने आया था। कोई कहता था यह रावण के पाप कर्म का फल है जो बन्दर के रूप में अब पकने और उसे दण्ड देने आया है। लोग कहने लगे कि जब से यह सीता लंका में आई है तब ही से लंका पर आपत्ति आने लगी है। रावण की बुद्धि भ्रष्ट हो गई। यह सीता गुप्त दूतिनी है। धीरे धीरे राक्षसी स्त्रियों से लंका का भेद लिया। बन्दर उससे अशोक वाटिका

में मिला और उसी स्थान से यह उत्पात आरम्भ हुआ। बंदर भेदी हो गया।

लाखों मुँह लाखों बातें! यह कुशल था कि विभीषण का नाम किसी ने भी नहीं लिया था। उसका महल नगर से कुछ दूरी पर था। वह तो बच गया। हनूमान उस पर नहीं कूदे और सब नगर का नगर श्मशान भूमि बन गया।

रावण चकित! दीवान मन्त्री भौचक्के होगये कि यह क्या हो गया! हँसी हँसी में बन्दर ने यह क्या खेल कर दिया! अब कहाँ रहेंगे! सोने की लंका तो मिट्टी में मिल गई। अब फूंस के झोंपड़ों में रहना होगा!

नगर का नगर व्याकुल हो गया। संसार में नाना प्रकार की आपत्तियाँ आती हैं। पानी की बाढ़ गांव के गाँव बहाले जाती है। रोग आता है। महामारी आती है। सैकड़ों मनुष्य उसकी भेंट हो जाते हैं लेकिन जब आग लगती है तो वह घास के एक तिनके को भी जलाये बिना नहीं छोड़ती।

निशाचरों ने भाग भाग कर अपनी जानें बचाईं। बनिये, महाजन, सौदा बेचने वाले सब के घर दुकान जल गये। नगर में जो भगदर मची वह उजड़ गया। जिसकी जहां सींग समाई उसी ओर भाग चला। जंगलों में जब कभी आग लगती है तो यही दशा हो जाती है। सिंह, चीते, रीछ, भेडिये, गीदड़, हिरन, पाढ़े, बारहसिंहे आदि भाग निकलते हैं।

हनूमान जब लंका को जला चुके, उछल कूद कर के समुद्र में जा गिरे। पूंछ की आग बुझ गई। अधजले कपड़े लत्तों को उधेड़ कर फेंक दिया और न्हा धोकर फिर अशोक वाटिका में आ रहे। सब अपने दुखों में दुखी हो रहे थे। किसी ने उन्हें नहीं देखा। न छेड़ छाड़ की।

नवां समुल्लास

हनुमान और चूणामणि

आग लगी, लंका जल गई, राक्षसियां सीता को छोड़कर अपने सम्बन्धियों के खोज में लगीं। सीता सुन चुकी थी कि हनूमान ने लंका दहन कर दिया है। त्रिजटा के स्वप्न का एक अंग पूरा हुआ।

हनूमान सीता के पास पहुंचे। वह अकेली बैठी हुई थी। इन्होंने कहा—'राम ने मुझे अपनी मुद्रा दी थी जिससे तुमको मेरे रामदूत होने का विश्वास होगया। माई ! तू भी कोई ऐसा चिह्न दे, जिससे राम को पता लगे कि मैं लंका में आकर तुझ से मिल चुका हूँ।'

स्त्री का हृदय बहुत कोमल होता है। सीता चित्त में तो सुखी हुईं कि हनूमान लौटकर राम को साथ लायेंगे, लेकिन स्त्री थी आँखें डबडबा आईं।

सीता बोली-"पुत्र ! तुम मिले, तुम्हें देखकर छाती ठंडी हुई। अब तुम भी जा रहे हो। जाओ, मेरी दशा और कथा राम को सुनाओ। तुम आप अपने कानों से सुन चुके हो कि एक महीना का जीवन मुझे दिया गया है। आप आगये तो मैं बच जाऊँगी, नहीं तो ये राक्षस मेरे लहू का प्यासा है। मुझे मार कर खा जायगा। राम से कहना—"तुम्हारी सीता के सिर पर दुख का पहाड़ आकर गिरा है वह उस से दबी पड़ी है।"

दिन गया रोते झींकते, रात गई तड़फाय।
सुध नहीं ली तुमने मेरी, हिया जिय अकुलाय ॥१॥
जल बिन मछली क्यों जिये, जल जब गया सुखाय।
तड़प तड़प तड़पे सदा, कोई नहीं सहाय ॥२॥

राम २ हा रमापति, कहाँ छिपे हो राम।
जब नही देखूं आंख से, क्यों पाऊँ विश्राम ॥३॥
नैन हमारे बावले, ढूँढें राम का रूप।
राम मिले संकट कटे, सूझे अगम अनूप ॥४॥
जिभ्या में छाले पड़े, राम पुकार पुकार।
आँखियाँ दोऊ पथरा गईं, पथ निहार निहार ॥५॥

लक्ष्मण से कहना-"पुत्र तुम्हारा कहना नहीं माना। स्त्री की आंख दूर दर्शक नहीं होती। मेरा अपराध क्षमा करें। मैं ने अपनी करनी का फल पाया।"

"दोनों भाइयों को मेरा नमस्कार! जाओ और उन्हें जल्द अपने साथ लाओ, तब तो सीता का जीवन बचेगा, नहीं तो वह मरने पर उधार खाये बैठी है।"

राम तुम कहां हो, राम मिलो अब आय।
सीता तड़पी राम बिन, राम न हुये सहाय॥
राम बिना जीना नहीं, राम बिना नहीं सुख।
स्वर्ग नर्क के तुल्य है, राम बिना है दुख॥

इतना कह कर चुप हो रही। रोते रोते हिचकियां आने लगीं।

हनूमान:—

धीरज धरे तो उतरे पार! नहीं तो डूबे भव जल धार।

सीता—"अच्छा जाते हो तो जाओ, आंधी के समान जाओ और बोंडर के समान जल्द आओ।"

हनूमान कोई चिन्ह (निशानी) प्रदान हो।

सीता-"हाँ मैं भूल गई। मेरा चित्त ठिकाने नहीं है। मुझे तन मन की भी सुध नहीं।"

सीता ने चूड़ामणि उतार कर दिया-"इसे ले जाओ। राम को विश्वास होगा कि तुम मेरे पास आये थे और यदि रास्ते में तुम मेरा समाचार लेना चाहो तो इसे देख लिया करो। यह मेरी अवस्था का वृतान्त तुमको भी दिखाता रहेगा।"

हृदय भीतर आरसी, मुँह देखा नहीं जाय।
दृष्टि रूप पर तब पड़े, दुचिता जाय नसाय॥

हनूमान ने नमस्कार किया। सीता ने आशीर्वाद दिया।

दसवाँ समुल्लास

चूणामणि

हनूमान ने सीता से चूणामणि लिया। यह क्या है? न कोई अधिकारी मिलता है न प्रश्न करता है। न कोई उत्तर दिया जाता है और साथ ही उत्तर दाता भी नहीं है। उत्तर प्रश्न से उत्पन्न होता है।

राम ने हनूमान को मुद्रा (मुद्रिका) दी थी। वह क्या थी? ज्योतिर्मुद्रा। सीता ने चूणामणि दिया, वह क्या था? चोटी का साधन। चूड़ा (चोटी-संस्कृत चूल=उठाना) और मणि (रतन हीरा) चोटी का हीरा, शिखा साधन है, कपाल क्रिया है। मुद्राओं का साधन सूत्रों (इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना) नाड़ियों में किया जाता है। आज कल के नाम के हिन्दू शिखा सूत्र तक का भेद तो जानते नहीं, वह मुद्रा और चणामणि को क्या समझेंगे—

जब कोई जानने वाला ही नहीं तो यह रहस्य जनावें किसको और जाने कौन!

जब धन का गाहक मिले, तब धन लाख विकाय।
जब धन का गाहक नहीं, कौड़ी बदले जाय॥१॥

हीरा परखे जौहरी, शब्द को परखे साध।
जो कोई परखे साध को, ताका मता अगाध ॥२॥
नाम रत्न धन मुक्त में, गाँठ खुली मन माँहि।
सेंत मेंत ही देत हों, गाहक कोई नांहि ॥३॥
गाहक नहीं तो किसे दूं, लेने वाला कौन।
रामायण की कथा को, हां रहा कह के मौन ॥४॥
शब्द २ का भेद है, वाच लच्छ का ठौर।
कथता वक्ता बहुत हैं, मथ काढ़ें सौ और ॥५॥

सुन्दर काण्ड सुपँथ खँड है। पंथ में चले सो पंथाई! हनूमान चले। मुद्रा से पंथ को आरम्भ किया और चूणामणि को प्राप्त किया। मुद्रा राम ने दिया और चूणामणि सीता ने दिया। पूरा पंथ मिल गया और वह दिव्य दृष्टि वाले निर अहंकारी देवता तो पहिले ही से थे अब जो कुछ कसर रह गई थी राम और सीता ने उसे पूरी करदी।

नोटः—यह रहस्य ग्रन्थ बद्ध या पुस्तक बद्ध नहीं है और न हो सकता है। जो अधिकारी हों किसी सच्चे संत से इसका भेद जानें।

ग्यारहवाँ समुल्लास

हनुमान विभीषण (फिर)

हनुमान सीता से मिलकर विभीषण के घर गये। मिलना आवश्यक था। न मिलते तो काम अधूरे का अधूरा रह गया होता।

अभी लंका जल रही थी। लोग भाग रहे थे। जान सबको प्यारी होती है। श्मशान भूमि में कोई औघड़, अवधूत या

अघोरी ही रहता होगा। यह उछले. कूदे, कुदके, फांदे ! संसार को न बनते देर न बिगड़ते ! क्या था क्या होगया। इन्द्रजाल की माया ! अभी है अभी नहीं है ! या तो वह सोने की सुहावनी बस्ती थी या अब जल कर राख हो रही थी !

दो दिन का त्यौहार है, दो दिन का व्यौपार।
दो दिन का अधिकार सब, है मिथ्या संसार ॥

रास्ते में किसी से मुठभेड़ नहीं हुई, न किसी ने रोक टोक की। रोकता कौन ! इधर लंका जल रही थी, उधर उसके रहने वाले चिंता की आग में जल रहे थे। इन पर किसी की दृष्टि तक न पड़ी।

विभीषण अभी दरबार से आया था। मिला। प्रणाम किया। आसन देकर बिठाया।

विभीषण ने कहा—"नगर तो भष्मी भूत हो गया।"

हनुमान-"यह तुम्हारा ही पुण्य प्रताप था। न तुम भेद देते न उसकी यह दशा होती।"

घर का भेदी लंका ढावे, सोने का घर धूरि मिलावे।

सब कुछ जल गया, बिजली घर, वरुण, पानी शाला, वायुशाला, कला कौशल का स्थान ! बारूद जला, गोले जले, भाप जली, हथियार, तोप. तलवार, शंघनी एक भी तो नहीं बचा। अब मेघनाद कहाँ से ब्रह्म धनुष और ब्रह्म सर लायेगा ! फिर दूसरी बार सामग्री बनाने और इकट्ठा करने में बहुत देर लगेगी। अब राम को जाकर मैं लाऊँगा और लंका सहज में पराजय होगी। तुमने मेरी बड़ी सहायता की।"

विभीषण—"मैं बड़ा दुखी हूं।"

हनूमान—"क्यों ?"

विभीषण—"नहीं राम मिले न जगत मिला,
न इधर का हुआ न उधर का हुआ।

नहीं भक्ति न मुक्ति न नाम लिया,
न इधर का हुआ न उधर का हुआ ॥"

हनूमान--"घबराये क्यों जाते हो! सब कुछ मिलेगा। राम की भक्ति करो। राम ने पूरण ब्रह्म का अवतार धारण कर रखा है।"

विभीषण—"राम का दर्शन होता तब भी बात थी।"

हनूमान—"अभी समय नहीं आया। मिलोगे अवश्य मिलोगे। राम तो आप ही आप अब लंका में पधारेंगे।"

विभीषण—'मैं मन का चंचल हूं। भक्ति क्या कर सकूंगा!"

हनूमान—"तुम चंचल नहीं हो अज्ञानी हो।"

विभीषण-"अज्ञानी ?"

हनूमान—"हां, अज्ञानी और इसी लिये राक्षस हो।"

विभीषण-"मैं तुम्हारी बातों को नहीं समझ पारहा हूं।"

हनूमान-"इसी के समझाने के लिये तो इस समय मैं तुम्हारे पास आया हूँ। सुनो विभीषण! इस मन की तीन वृतियाँ होती हैं। या यों समझो इसके तीन रूप होते हैं-अज्ञानी, मूढ़ और चंचल।

अज्ञानी ऊँचा, चंचल बिचला और मूढ़ निचला होता है। राम बड़े दयालु कृपालु और करुणालु हैं। जो उनकी शरण में आते हैं सब को तार देते हैं और उनके चरण कमल की छांह में सद्गति, शान्ति और निरभ्रान्ति मिलती है। तुम अपने आपको तरा हुआ समझो। तुम्हारे तरने में कोई सन्देह नहीं है।"

विभीषण--"राक्षसी योनि बुरी है। राक्षसों का तरना कठिन है।"

हनूमान–"राम के यहां यह पृछ गछ नहीं है।

जो शरण में आ गया वह तर गया।
नीची योनि में था वह ऊपर गया॥
राक्षस को तरने का अधिकार है।
राम की करुणा से बेड़ा पार है॥
राम को प्यारे हैं उनके भक्त जन।
शुद्ध और निर्मल हुआ है जिनका मन॥
राक्षस से है नहीं घिरणा उन्हें।
राम पूरण ब्रह्म के अवतार हैं॥
राक्षस का पद है ऊँचा और बड़ा।
भक्त है वह फिर न अधगति में पड़ा॥"

विभीषण-"तुम राक्षस की बड़ी महिमा गा रहे हो।"

हनूमान—"फिर झूँठ क्या कह रहा हूं।"

विभीषण—"कोई बात है जिसे मैं नहीं समझता, समझाओ तो समझूँ।"

हनूमान—"मैंने समझाने को तो तुम्हें समझा दिया। तुम ने विचार नहीं किया। अब फिर समझाता हूं। जिसके मन की वृति जैसी होती है उसी की मुख्यता के अनुसार उसका नाम और रूप होता है। जो अज्ञानी सात्वकी और सतोगुणी होता है, वह राक्षस है। चंचल दुचिता और दुविधा वाला रजोगुणी होता है। वह "मुझ" जैसा बंदर, और जो मूढ़ आलसी और तमोगुणी होता है वह रीछ है।

सतोगुणी राक्षस वैष्णवी मन वाला है, रजोगुणी बन्दर ब्रह्मावी मन वाला है और तमोगुणी रीछ शैवी मन वाला है। मेरी बातों का विचार करके तुम आप निर्णय करो कि मैं सच कहता हूं या झूँठ कहता हूँ।"

विभीषण—' अज्ञानी तो मूर्ख होता है।"

हनूमान—"कभी नहीं, अज्ञानी का पद सब से ऊंचा है। वह पूरा राक्षस है। उसकी उपेक्षा रीछ और बन्दर नीचे हैं। तुमने अभी तक राक्षस और अज्ञानी शब्दों का अर्थ नहीं समझा। यह कारण है कि दुविधा में पड़ गये हो। सुनो! अज्ञानी वह है जिसे ज्ञान नहीं है। अज्ञानी पंडित शास्त्रज्ञ, वैदज्ञ, कला कौशल में प्रवीण, नीतिवान, विवेकी सब कुछ है। यह सारी विद्याओं में प्रवीण है। भेद यह है कि उसे आत्मा का ज्ञान नहीं है। आत्मा के ज्ञान न होने के कारण वह अज्ञानी कहलाता है। वह मूढ़ नहीं है।

और ऐसा क्यों है? क्योंकि वह राक्षस है। जो केवल अपनी ही रक्षा का ध्यान रखे और दूसरों की रक्षा के विचार से शून्य हो, उसे मैं राक्षस कहता हूं। राक्षस, सुरक्षक, सुभक्षक स्वार्थी, स्वकर्मी, स्वधर्मी है। औरों की भलाई का उसे किंचित ध्यान नहीं रहता, जैसे लंका निवासी रावण की दशा है। यह अपने लिये सब कुछ करता है अन्य मनुष्यों या अन्य जातियों से बैर रखता है। यह कारण है कि वह राक्षस है।

मरना भला है उसका, जो अपने लिये जिये।
जीता वह है जो, मर चुका संसार के लिये॥

ए विभीषण! इसी सुरक्षा के भाव से तुम राक्षस हो और आत्मा का ज्ञान न रखने से अज्ञानी हो।"

राम ने बन्दर और रीछ दोनों की सैना इकट्ठी करली। मैं लंका में आया कि राक्षसों को अपने साथ मिला लूं। तुम मिल गये। तुम्हारे मिलने से राम का बड़ा काम हुआ। अब तुमको राम की शरण में आना चाहिये। उनकी भक्ति करने से अज्ञान दूर होगा। ज्ञानी बनोगे और चाहे राक्षस बने रहो

दूसरों की भलाई के निमित्त भी कुछ करना पड़ेगा "निष्काम-कर्मः परोकर्मः।"

विभीषण ने हनूमान से दीक्षित होने की इच्छा की और उन्होंने राम के नाम पर उसे दीक्षा दी और विदा होकर समुद्र पार जाने के निमित्त उत्तर की ओर चले। तट पर पहुंचकर ऐसे घनघोर शब्द के साथ बिजली की कड़क के समान किलकारी मारी कि बहुत सी गर्भवती राक्षसियों के गर्भ गिर गये होंगे।

द्वितीय भाग

पहिला समुल्लास

हनूमान लंका से लौटे

जैसे चढ़े थे वैसे ही उतरे भी! चढ़ना कठिन उतरना सरल! चिकूट की चोटी पर छलाँग मारी और समुद्र की इस पार आ पहुँचे। तुम कहोगे यह असम्भव है। मैं कहता हूं यह सम्भव से सम्भवतर है। बात समझ में न आवे तब निस्सन्देह कठिन है। जब समझ में आगई, फिर साधारण!

तुम प्रति दिन अपने घट में सुषुप्ति के स्थान में जाते हो कि नहीं? जाग्रत से कूदे और गहरी नींद के मंडल में जा पहुंचे। कैसे गये कैसे आये? बताओ तो सही! गये तो थे और आये भी हो, लेकिन जाने आने की समझ तुममें नहीं है। सहज है। प्रति दिन का खेल है। फिर भी बता नहीं सकते। यही बात त्रिकुटी और लँका की भी है।

राम ने ज्योतिर्मुद्रा दिया।
हनूमान ने उसको लिया॥

ज्योति ज्योति में किया प्रवेश ।
सहजे आये लंका देश ॥
जगमग जगमग लंक की चोटी ।
बड़ी कहो वह नहीं है छोटी ॥
मेघनाद गरजा और तड़पा ।
संमुख आकर हमको हड़पा ॥
सीता मिली सुषुम्ना नाड़ी ।
पहुंच गये यह सभा अगाड़ी ॥
रावण मिला विभीषण मिला ।
कपि ने राम काज को किया ॥
चूणामणि सीता से पाया ।
कूद फांद सिंध तट आया ॥

जाने में कठिनाई थी, आने में कुछ नहीं। केवल एक बार इस तत्व को समझ लो। फिर सुख से आओ, जाओ। तुम पोथी ग्रन्थ की रामायण तो पढ़ते हो, घट की रामायण नहीं पढ़ते ।

समझो भी तो कैसे समझो ।
बूझो भी तो कैसे बूझो ॥
पढ़ना लिखना सरल है भाई ।
गगन चढ़ो परबो कठिनाई ॥
तुम कहते हो पुस्तक लेखी ।
मैं कहता हूँ आँखों पेखी ॥
देखभाल की बात है न्यारी ।
मिले कोई उत्तम अधिकारी ॥
तब मैं इनका भेद बताऊँ ।
उलट फेर कर लंका जाऊँ ॥

उलटा नाम का अजपा जाप।
जपे तो भागे घट का पाप॥
वाल्मीकि जब ब्रह्म कहावे।
ब्रह्म लोक में बासा पावे॥
ब्रह्म को जान ब्रह्म बन जावे।
तब कुछ भेद ब्रह्म का पावे॥
मैं तोय पूछूं पंडित बात।
रामायण में खण्ड हैं सात॥
सात खंड का भेद है क्या २।
हमें सुना क्या क्या है पढ़ा॥
नहीं रीछ नहीं बन्दर भाई।
नहीं विभीषण की गति पाई॥
तू तो पड़ा भ्रम के कूप।
देखा नहीं राम का रूप॥
बिन देखे नहीं बात बनाना।
बिन देखे क्या कथा सुनाना॥

हनूमान तट पर आगये। रीछ बन्दरों ने देखा, सुखी हुये। वह गये थे अकेले! आये भी अकेले! और उनके सुख का भाग इन सबको मिला।

कैसे मिला? जैसे गहरी नींद का जाने वाला जब जाग कर जागृत मँडल में आता है उसके आने से देह और देह की इन्द्रियाँ सब की सब सुखी हो जाती हैं और सब में अपूर्व बल और शक्ति आ जाती है। कहो यह झूँठ है कि सच है? वही बात तो थी, दूसरी क्या थी!

कप कप काँपने वाले कपि (बन्दर और रीछ) प्रसन्न हो गये। कपियों (बन्दरों) की कप कपी गई। वाह वाह! हनूमान आये। राम का काम कर आये। जीवन दान मिला।

सुग्रीव के हाथ मारे जाने का भय जाता रहा क्योंकि हनूमान विभीषण (भय में रहने वाले) का रूप देख आये थे।

हनूमान ने साधारण समाचार सुनाया। शेष राम के लिये रख छोड़ा। यह असाधारण भेद के अनुरागी अधिकारी नहीं थे।

अधिकारी जब मिले सयाना।
उसको तत्व सार बतलाना॥
नहीं तो मौन धार कर रहना।
नहीं कुछ कथना नहीं कुछ कहना॥

दूसरा समुल्लास

किष्किंधा की वाटिका

बन्दर तो बन्दर ही होते हैं। चंचल, तोड़ फोड़ और मरोड़ करने वाले जल्दी जल्दी लौटे। किष्किन्धा (मैसूर) में पहुंचे। सुग्रीव की राजवाटिका में प्रवेश किया। लगे वृक्षों के फल फूल पत्ते तोड़ कर खाने।

कोई उछला, कोई कूदा, हिलाई वृक्ष की डाली।
हुये भये भीत इनको देखकर उस बाग के माली॥
जब आये रोकने, घूसों से मारा इनको कपियों ने।
कहां उन्मत्त वानर बात को उनके लगे सुनने॥
हंसी व दिल्लगी थी, खिलखिलाते दौड़ते थे वह।
झुका कर डालियों को फल को उनके तोड़ते थे वह॥
जो आया सामने, मारा उसे, वह तो लगा रोने।
लगे ये बीज ऊधम का वहाँ उस बाग में बोने॥

माली दौड़े। "महाराज! राजकुमार अंगद ने राज वाटिका

का नाश करवा दिया। समझाया, बुझाया, मनाया, मनवाया, डराया, धमकाया, हमारी एक न सुनी और उनके साथ के सभी बानर वाटिकाओं को उजाड़ रहे हैं। हम पर मार पड़ी, भाग आये। नहीं तो जान की कुशल नहीं थी।"

सुग्रीव सुनकर सुखी हुये—"यह सब सीता की खोज कर लाये। मगन हो रहे हैं। नहीं तो किसी में सामर्थ्य थी जो निडर होकर मेरे बाग को उजाड़ता।"

वह आप मधुवन में आये। देखा। यह बहुत मग्न थे। असाधारण चमक दमक थी।

आंख निरख कर निरख ले माथा।
सत की जोत रहे उन साथा॥
यह चिन्ह देख करे पहिचान।
जिसको है सत मत का ज्ञान॥

सब उनके पांव पर पड़े। बूढ़े जामबन्त ने कहा—"प्रभु! हनूमान राम का काम कर लाये। सीता की खोज लगा ली। उसे रावण ले गया। अशोक बाटिका में रख छोड़ा है।"

सुग्रीव बन्दरों और रीछों को साथ लिये हुये राम की कुटी में पहुँचे। दोनों भाइयों को नमस्कार किया।

तीसरा समुल्लास

राम को सीता का समाचार

जानने को तो राम सब कुछ जानते थे। फिर भी कुशल पूछी। उत्तर दिया गया।

कुशल आप के पद कमल में है स्वामी।
नमामि नमामि नमामि नमामि॥

जहां पद कमल, मुक्ति का पद वहां है।
कमल पद छुटे शान्ति फिर कहाँ है॥
हनूमान ने खोज सीता का पाया।
हना मान रावण को नीचा दिखाया॥

राम ने हनूमान को पास बुलाया। पूछा सीता कैसे है? यह पांव पर पड़े—उत्तर दिया:—

नहीं जागती है न सोती है सीता।
सदा आँसू से मुँह को धोती है सीता॥
पड़ी दुख के सागर में वह डूबती है।
कोई दुदशा उसकी कैसे सुनावे॥
प्राणों के प्राण आप हैं प्राण उसके
वह है देह और आप हैं जान उसके॥
न खाना न पीना, न दाना न पानी!
है दुख ऐसा कैसे कहे हाय वाणी॥
तपे ताप अग्नि में आठों पहर वह।
मिली वृक्ष छाया न बाहर न घर है॥
डरी सहमी भय-भीत रहती है सीता।
न कुछ बोलती है न कहती है सीता॥
सताता है रावण उसे आप आकर।
दशा मैंने देखी सभी आप जाकर॥
कहूँ क्या! नहीं कहने की शक्ति पाई।
न कहने की बुद्धि मुझमें और न युक्ति आई॥
दिया मैंने ढाढस कहा उनसे "माता।"
धरो धैर्य, हैं राम आनन्द दाता॥
दिया उत्तर उनने, उन्हें जाके लाओ।
सन्देशा मेरा राम को कह सुनाओ॥
जो इक मास में राम लँका न आयें।

मारी सीता को अपने पल में जलायें ॥
न आये तो सीता मारी की मारी है।
विरह अग्नि में वह जरी और बरी है ॥
सदा राम का ध्यान करती है मन में।
वह है माँस में और नहीं रहती तन में ॥
न सुधबुध है तनकी न सुधबुध है मनकी।
न सुधबुध है घरकी न सुधबुध है बनकी ॥
तपस्वी बनी तप मे जीती है सीता।
न खाती है कुछ और न पीता है सीता ॥

हनूमान ने चूणामणि सामने रख दिया। राम ने उठाकर अपनी छाती से लगा लिया। नर थे नारायण की गति छोड़ कर नर बने थे। रो पड़े। आँसू पोंछे। हनूमान से पूछा-"तुम ने वहां लंका में जाकर क्या २ काम किये ?"

हनूमान ने एक एक करके सारी कथा सुनादी।

राम-"तुम ने प्रशँसनीय काम किया! इस पत्थर को उठाना तुन्हारा ही काम था।"

हनूमान-"आप जिसे चाहो, बड़ा बनाओ, जिसे चाहो छोटा बनाओ। मैं क्या! और मेरी शक्ति क्या! आप के प्रताप ने काम किया। मुझे कुछ सुयश मिलना था, मिल गया।"

हनूमान क्या ? वह बन्दर का बन्दर।
वह है बून्द और आप इसके समुन्दर ॥
है बून्दों के पीछे समुन्दर की शक्ति।
नहीं उसका बल है वही बल की मुक्ति ॥
समुन्दर न हो बून्द का क्या पता है।
न वह वृक्ष डाली न पत्ता लता है ॥
किया काम सब आप ने आप अपना।
दिखाया विचित्र और अद्भुत यह सपना ॥

यह है खेल, सब को खिलाती है माया।
है वह आपके रूप की काली माया॥

राम–"अक्षयकुमार को मारा, अच्छा किया! लँका जलाई, बहुत अच्छा किया! सीता का समाचार लाये यह सब से अच्छा किया! इन सब से और अच्छा काम क्या हुआ?"

हनूमान—"रावण का भाई विभीषण आप का सेवक बना।"

राम ने हनूमान की ओर दृष्टि की। "यह बहुत बड़ा काम हुआ। इसके बिना कुछ नहीं हो सकता था। वृक्ष की जड़ वृक्ष की डाली के बेंट ही से कटती है। यह विभीषण कहाँ है?"

हनूमान—"लंका में है, चरण कमल में आने का इच्छुक है।"

राम–"आता है तो आने दो! अब जल्दी लंका पर चढ़ाई करने का यत्न करो।"

चौथा समुल्लास

राम की सैना

आज्ञा पाते ही सुग्रीव ने बन्दरों और रीछोंकी सेना इकट्ठी की। यह टिड्डी दल क समान कुटी के गिर्दागिर्द झुण्ड बांध-बांध कर खड़े हो गये। राम ने देखा। लक्ष्मण ने देखा। सुग्रीव ने सब का नाम बता २ कर उन्हें दिखाया।

किसी ने किसी राजा के साथ ऐसी विचित्र सेना कहाँ देखी थी। न किसी ने आज तक आंखों देखा न किसी ने आज तक कानों सुना।

राम ने सुग्रीव को सुना कर हनूमान से कहा—"इस सेना में केवल दो अंग हैं। एक अंग की कसर है।"

सुग्रीव ने यह रहस्यपूर्ण वाणी नहीं समझी। हनूमान समझ गये। "प्रभो! इस का प्रबन्ध हो चुका है। यह त्रुटि भी आप ही आप पूरी होगी। समय आ गया है। आप की कृपा से सब कुछ हो जायगा।"

राम—"सेना सूनी प्रतीत होती है। एक अंग भंग है और कुछ नहीं। वह पूरा हो जाय तो फिर विजय पाने में कोई शंका न रहे।"

हनूमान—"ऐसा ही होगा।"

सुग्रीव—"प्रभो! मैंने इस त्रुटि का आशय नहीं समझा। आज्ञा कीजिये। प्रबन्ध कर दिया जायगा।"

राम—"तुम इसे अभी नहीं समझे। न समझ सकते हो। हनूमान ने समझ लिया है, वह समझा देंगे। चलो अब लंका चलो, समुद्र को किसी प्रकार पार करो, रावण को मारो और सीता को लाओ।"

सुग्रीव—"जो आज्ञा!"

पाँचवां समुल्लास

समुद्र का तट

राम लक्ष्मण सेना को साथ लिये हुये समुद्र के किनारे पहुँचे। टीलों पर डेरा डाल दिया गया। फूंस के झोंपड़े बहुतायत से उसी दिन बन गये।

समुद्र झकोले ले रहा था। लहरें आकाश मंडल की ओर उठीं। पृथ्वी का जल गगन मंडल को तर करना चाहता था। रात आई, लहरें उठीं, गगन-मंडल से बातें करने लगीं। वह अपने तारों की सहस्रों आंखों से पृथ्वी का साहस देखने लगा।

वार भाटों के खचाखच मुठभेड़ की लीला देखने योग्य थी। ाम उधर देखने लगे। लक्ष्मण की भी दृष्टि उस पर गई नाटक ा परदा उठा। अन्न जल करने के पश्चात् वह सबके सब से देखने लगे। चांद निकल आया था। रात्रि सुहावनी बन ई थी। शरद ऋतु के शुद्ध और निर्मल आकाश मंडल का या कहना है! वह भक्तों के महान हृदयों के समान विमल। रहा था। राम ने सुग्रीव से कहा—'समुद्र को कैसे पार किया जावे?'

सुग्रीव बोले—'इससे रास्ता माँगिये। आपको अवश्य ास्ता दे देगा।"

लक्ष्मण को सुग्रीव की बात बुरी लगी—"माँगना कैसा! ांग जाँच से भी आज तक किसी का काम चला है। माँगने ाले मुर्दा होते हैं। उनमें सामर्थ्य नहीं, बल नहीं, तेज और ाक्रम नहीं! माँगो, देखूंगा कि यह तुम्हारी विनती सुनता है ा नहीं।"

क्या मांगता है, माँगने वाला नहीं सुखी।
माँगता है भिकारी भिक्षु, है संसार में दुखी॥
बल है तो बल से काम कर और बल को साध ले।
धर्म अर्थ काम मोक्ष के धन को अगाध ले॥
जो मांगता है काम को पूरा करेगा क्या।
भव सिन्धु पार जायगा इससे तरेगा क्या॥
मैं बाण से सुखाऊंगा सागर के नीर को।
फूकूंगा और जलाऊंगा निज बल से नीर को॥
आये हैं युद्ध करने भिकारी बने हुये।
करतब दिखाने आये मदारी बने हुये॥

लोगों ने फिर सम्मति दी कि यहां का राजा समुद्र है।

नीति कहती है कि जिस राज्य में कोई जाय उसके नियम का पालन करे।

राम समुद्र के तट पर आये। बन्दरों ने बहुत विनती और प्रार्थना की। उसे कौन सुनता था। लहरें उठीं। बन्दरों पर झपटीं। सब को तर बतर कर दिया। राम के पाँव तक भी पानी पहुंचा। लक्ष्मण यह कर्तव्य देख देखकर मुस्कराते रहे।

लक्ष्मण ने इन्हें कहा—"देखा, भिकारियों के साथ यही बर्ताव किया जाता है, जो तुम्हारे साथ किया गया।"

आलसी देव मनाते हैं भिकारी बनकर।
पित्रों के चरणों में गिरते हैं वह सर को धरकर।
स्तुति गा के वह मंदिर में सुनाने आये।
देव को सीधा समझ कर वह मनाने आये॥
पित्र और देव किसी के काम कब लगे आने।
कर्म योगी जो है इस बात को वह कब गाने॥
मूढता छोड़ दो बल बुद्धि से कुछ काम करो।
काम करते हुये संसार में तुम नाम करो॥

राम को भी क्रोध आया। लक्ष्मण से बोले "लाओ अपना बाण और सुखा दो इस घमँडी सागर को अभी!"

लक्ष्मण प्रसन्न हुये। धनुष बाण लेकर वीर रस के रूप बन कर खड़े हुये।

समुद्र डरा, लहरें उठीं, हाथ में मोतियों का थाल लिये हुए सामने आया। चरणों में गिरा, भेंट धरी और विनती की:—

मैं हूं सेवक आपका और आप हैं स्वामी मेरे।
आप की महिमा अधिक है आप हैं सबसे परे॥
क्रोध क्यों है, क्यों दया का त्याग प्रभु ने कर दिया।
दास के हृदय को क्यों दुख शोक देकर भर दिया॥

सिंध में महिमा तुम्हारी है मेरी महिमा है क्या।
आपका है गरिमा, लघिमा, अनिमा और मेरा है क्या॥
काम ऐसा कीजिये जिसमें मेरा सम्मान हो।
मान मर्दन जब हुआ सागर का क्या फिर मान हो॥

राम को दया आई। जगत उनके आधार पर है। उनका है। समुद्र सूखा तो किस का समुद्र सूखा। पूछा—"क्या करना चाहिये?"

समुद्र ने कहा—'आप की सेना में दो बन्दर हैं-नल नील। दोनों शिल्प विद्या में प्रवीण हैं। यहाँ से लेकर लंका तक सेतु बाँधें. पानी पर पत्थर तैरायें, आप के सहकारी कर्मकारी उस पर होते हुये साधारण रीति से समुद्र पार कर जायें। इस से आपका नाम रहेगा और मेरा सन्मान होगा।"

राम—"सामिग्री कहां से आयेगी और कौन लायेगा?"

समुद्र—"जो नील बन्दर, रीछ आपके पास हैं, एक एक पत्थर लावेंगे तो यहाँ से वहाँ तक लम्बा चौड़ा पुल बन जायेगा। हनूमान पर्वत उठायें, अंगद देख भाल करें, सुग्रीव का प्रबन्ध रहे, नल पत्थर जमायें, नील सीमन्ट लगाये और बन्दर पत्थर गढ़ें। यहां की पृथ्वी में बहुत लस है। पत्थर जम कर बैठा तो फिर उखड़ने पर न आयेगा। मैं अपनी लहरों की रोक थाम कर रक्खूंगा। पुल को हानि न पहुँचने दूंगा।"

राम—"मंत्र तो अच्छा है।"

और सब ने एक मुंह होकर कहा—"हां, अच्छा है।"

समुद्र नमस्कार करके पानी की लहरों पर चढ़ कर चला गया और पुल का प्रबन्ध होने लगा। विन्ध्याचल पर्वत को किसी समय में अगस्त्य नामक ऋषि ईंजीनियर ने तोड़ फोड़ कर चौरस बना दिया था जिसमें हर जगह मनुष्यों की बस्तियां

बन गई थीं। 'बन्दर उठे, पहाड़ों के पहाड़ उखेड़ लाये और पुल बनाने लगे।

नोट-तुम पूछोगे समुद्र जड़ है या चेतन! मैं कहूंगा जड़ और चेतन दोनों हैं और दोनों के एकत्रित होने से जो शक्ति सब को बाँध रखती है वह समुद्र है। तुम भी जड़ और चेतन दोनों हो, तुम में अगणित जीव जन्तु बसते हैं। तुम इनके आधार हो। इस प्रकार इस संसार का सब जगह प्रबन्ध है।

तुम पूछोगे—"क्या समुद्र बोलता है?" मैं कहूंगा यह बुलाने से बोलता है, जैसे ब्रह्म में सब कुछ है और तुम उसे मना कर सिद्ध कर लेते हो, वैसे ही तुम में युक्ति के आजाने से सब सहायक और उपयोगी हो जाते हैं।"

छटवाँ समुल्लास

लंका में खलबली

रावण के दूत सारे संसार में बिखरे हुये थे जो उसे पल २ का समाचार पहुँचाते थे। उसने सुना कि तपस्वी बालक सिन्धु के तट पर बन्दर और रीछ की सेना लेकर चढ़ आये। समुद्र से बिनती करते हुये रास्ता मांग रहे हैं। यह सुन कर वह बहुत हँसा। फिर समाचार मिला कि पुल बन रहा है। यह मुस्कराया! उसने इन कामों को बच्चों का खेल समझा।

रात को महल में सोने गया। मन्दोदरी इसकी पटरानी थी। कहने लगी—"पति! तुम ने यह अच्छा नहीं किया। सीता को जब से लाये हो लंका उजड़ रही है। इसे फेर दो। इसी में भलाई है।"

रावण-"स्त्रियों में डाह बहुत होती है। वह महा सुन्दरी

है। उसे देख कर तू ईर्ष्या की अग्नि में जल रही है।"

मन्दोदरी—"वह महा पतिव्रता देवी है। वह तो तुम्हें फूटी आंख से भी नहीं देखती। जाते हो कटी जली गाली गलौज सुन कर चले आते हो। वह तुम से बात तक तो करना नहीं चाहती। तुम्हारा रूप देखकर घृणा करती है।"

रावण-"यह स्त्रियों के चोचले हैं। आज नहीं तो कल राह पर आजायगी। तुझे क्या पड़ी है।"

मन्दोदरी—"सोने की लंका जल गई और पूछते हो कि तुझे क्या पड़ी है।"

रावण—'जली हुई लंका फिर बस गई। पहिले से भी अच्छी बन गई। लंका के कारीगरों ने अपनी मायावी (साइंटिफिक) रचना से उसे बहुत सुन्दर बना दिया। सड़ी गली सामिग्री जल गई तो अच्छा हुआ। मेघनाद नगर को बसा रहा है। सुन्दर बना रहा है। जाकर देख। आंखें खुल जायेंगी।"

मन्दोदरी-"वह आज बसती है। कल फिर उजड़ेगी। राम का साधारण बन्दर आकर उजाड़ गया। अब तो पलटन की पलटनें आ रही हैं।"

रावण—"उनकी मृत्यु लिये हुये आरही है। राक्षस भूके हैं। उनके मांस हड्डियों तक को चबा जायेंगे। इनका आहार आरहा है। चिंता किस बात की है।"

मन्दोदरी—'मैंने सुना है कि राम ब्रह्म के अवतार हैं। वह जगत पति हैं। उनका सामना कोई नहीं कर सकता।"

रावण—"तूने सुना है देखा नहीं है। वह नर बालक हैं। केवल दो पुरुष हैं-राम और लक्ष्मण! दुबले पतले! मेरे भय से भयमीत! वह मुझ से क्या लड़ेंगे!"

मन्दोदरी—'मैं यह सब नहीं जानती। सीता को लौटादो।

जब तुम वीर थे तो उसे स्वयंबर में क्यों नहीं जीता! वहाँ तो राम ही की विजय हुई। सीता को दे दो। राम से मित्रताई करो। इसमें तुम्हारा कल्याण है। सुनती हूं कि राम अपने शरणागत की रक्षा करते हैं वह तुम्हारा अपराध क्षमा कर देंगे।"

रावण—"स्त्री का स्वभाव कोमल है। तू यों ही डर रही है। मैंने अपने भुज बल से संसार को विजय कर लिया। यह दो लड़के क्या कर सकते हैं।"

मन्दोदरी-"काल समीप आगया। बुद्धि भ्रष्ट हुई। उचित, अनुचित की समझ जाती रही।"

काल आया बुद्धि सब जाती रही।
मृत्यु आके सिर मण्डला रही॥
बात तक सुनते नहीं मनोगे क्या।
मित्र शत्रु अपने पहिचानोगे क्या॥

यह कह कर वह रोने लगी। इसकी रात यों ही गई। नींद नहीं आई। प्रातः काल उठ कर सभा में आया। या तो दिन चढ़े तक सोता रहता था या आज से निशाचरी स्वभाव को धक्का लगा।

मन्त्री और दीवान को बुला भेजा। वह आये। पूछा 'राम लक्ष्मण सागर तट पर आगये तुम लोग क्या कहते हो?'

सब ने एक मुँह होकर कहा—"आते हैं तो आने दीजिये। क्या चिन्ता है! राक्षस उन्हें खायेंगे रक्षा और सुरक्षा होगी। घर आये हुए आहार को फेरना अच्छा नहीं है।"

आता हो तो उसको आने दीजिये।
जाता हो तो उसको जाने दीजिये॥
मच्छर और सिंह की लड़ाई।
मच्छर की है इसमें क्या भलाई॥

बन्दर गिरिवर का सामना क्या।
मुट्ठी में वायु बाँधना क्या॥
जुगनू कहाँ और कहाँ है भानु।
तिनका कहाँ और कहाँ कृपाणु॥
रावण और राम जब लड़ेंगे।
फिर जायेंगे राम पिट मरेंगे॥

विभीषण बोले—"नाथ! जिस सभा में मन्त्री, वैद्य और गुरु भय वश होकर हां में हां मिलाते हैं और सोच समझ कर न्याय की बात नहीं कहते हैं वहाँ से भलाई कूचकर जाती है।"

"आग, पानी, ऋण, शत्रु और पाप को कभी छोटा न समझना चाहिये। यह देखते देखते बढ़ जाते हैं।"

"राम ब्रह्म के अवतार हैं। उनका सामना काल भी नहीं कर सकता। दूसरा क्या करेगा!"

"सीता को लौटा कर क्षमा मांगिये। उनकी शरण लीजिये। वह आप पर दया करेंगे और फिर आपको संसार भर में किसी शत्रु का खटका न रहेगा।"

रावण पहिले ही जला भुना था। मन्दोदरी ने रात को उससे बहुत बुरा भला कहा था। वहाँ महल में तो वह सँभला रहा। यहां क्रोध को बस में न रख सका। उछल कर एक लात विभीषण के मारी। 'असभ्य! अयोग्य। मुंह सँभाल कर बात नहीं करता! मेरे पक्ष को निर्बल और शत्रु पक्ष को बलवान कर रहा है। मेरे टुकड़ों से पला और मेरा ही अपमान कर रहा है। जा दूर हो! राम ऐसे योद्धा और वीर हैं तो तू उनकी शरण में जा! अभी चला जा! अपना मुँह मुझे न दिखा!"

विभीषण ने रावण को अंतिम नमस्कार किया और अपने सहाई सवकों को साथ लिये हुये, आकाश मार्ग से होता हुआ समुद्र के उस पार निकल आया। उस समय आकाश मार्ग से

चलने की भी रीति थी।

मालियावन्त रावण का स्याना मंत्री था। उसने हाथ बांध कर कहा, "प्रभो! आप हमारे राजा, मैं आपकी प्रजा हूं। आपके कल्याण में हमारा कल्याण है। आपकी हानि में हमारी हानि है। दीन बन्धो! विभीषण का प्रस्ताव अनुचित नहीं था। उसने अनुचित बात नहीं कही थी। आज पुलस्त्य मुनि ने अपने शिष्य द्वारा विभीषण को कहला भेजा था, 'रावण को समझाओ कि वह सीता को देदे। राम के साथ बैर करना अच्छा नहीं है।"

"देखिये घर में अभी फूट पड़ गई। सुमति से धन सम्पत्ति की वृद्धि होती है। कुमति से यह घट जाते हैं। नीति के विरुद्ध कोई काम अच्छा नहीं समझा जाता। हम सबकी भलाई राम से मैत्री करने में है।"

मालियावन्त अभी और कुछ कहने ही को था कि रावण क्रोधातुर हो गया। 'क्या कोई नहीं है जो इस दुष्ट को अभी मेरे सामने से दूर कर दे।" राक्षस दौड़े। मालियावन्त प्रणाम करके घर पर चला आया।

सातवां समुल्लास

समुद्र तट पर राक्षसों का आगमन

समुद्र का किनारा राक्षसों से भरा था। उनमें रावण के दूत थे। बन्दर अभय थे। इन्हें पकड़ा, नोंचा, खसोटा, बांधा और इनके नाक कान काटने के पीछे पड़े। इन्होंने राम लक्ष्मण की सौगन्द दी—"हमको न मारो, न सताओ, न हमें कुरूप बनाओ। हम राम के शरणागत हैं।"

लक्ष्मण ने सुना—"दया आई और छुड़वा दिया।"

इसके पश्चात् विभीषण का दल पहुँचा। बन्दर उतावले होते हैं। इनके भी पीछे दौड़े। विभीषण का नाम सुनकर चुप हो रहे।

राम ने इनके आने का समाचार पाया। सभा की। रीछ और बन्दर मंत्री बैठे। बात चीत होने लगी। किसी ने कहा हमारे बीच में शत्रु दल के किसी पुरुष का आना ठीक नहीं है। इसको ताड़ना करके लौटा दिया जाय। किसी ने कुछ और किसीने कुछ सम्मति दी। राम ने सावधान होकर सबकी बातें मानलीं और सबके अंत में कहा—"पहिले यह जान लेना चाहिये कि विभीषण क्यों आये हैं। वह रावण के भाई मंत्री और राजकुमार हैं। जाओ, उन्हें यथोचित सम्मान से ले आओ।"

वह आये। साष्टांग दण्ड प्रणाम किया। राम तपस्वी और बन वासी थे। रेत की भूमि और कुशाशन! विभीषण ठाट बाट के साथ थे। राम उठे। उन्हें छाती से लगाया। लक्ष्मण का वर्ताव भी उनके साथ वैसा ही हुआ।

राम ने अपने आसन के पास उन्हें आसन दिया। कुशल पूछी। विभीषण बोले—"कुशल तो केवल आपके चरणों में है। जब दुख दाई संसार महा उत्पात मचा लेता है और मनुष्य सब प्रकार से दुखी हो जाता है तब उसे आपकी भक्ति की सूझती है और यह केवल आपकी शरण लेकर भक्त हो जाता है। मैं राक्षस हूँ। काम क्रोध लोभ मोह का सताया हुआ! मुझमें कुशल कहां! मेरा इन चरणों के समीप आना ही मेरी दशा पर प्रकाश डालता है। मैं शरणागत होने आया हूँ।"

राम—"कुछ तो कहो लंका की क्या दशा है।"

विभीषण—"रावण की बुद्धि भ्रष्ट होगई। मैंने समझाया

कि सीता को लौटा दो। राम की शरण लो। इस अपराध में उसने मेरे लात मारी। भरी सभा से निकल जाने और आपके समीप जाकर रहने की आज्ञा सुनाई। मैं घर भी नहीं गया। आकाश मार्ग से चरणों में चला आया।"

राम ने उस समय समुद्र से पानी मँगाया और विभीषण को राज तिलक देकर कहा–"भाई! आज से तुम लंका के राजा हो। रावण मरेगा। जल्द मारा जायगा। उसका काल आ गया और लक्ष्मण उस की जगह तुम को सिंहासन पर बिठायेंगे।"

"रघुकुल की यह रीति है कि जो शरण में आजाते हैं उनकी तन मन धन से रक्षा की जाती है। शरणागत को मारने काल भी आजाय तो रघुवंशी इसके लिये अपनी जान तक लड़ा देगा। हमारे वंश का दूसरा नियम है कि बचन को नहीं पलटते। तुम मेरे पास आगये अच्छा किया। अब अभय रहो। भय भीत होने से तुम विभीषण कहलाते थे। अब तुम्हारी दशा कुछ और होगी। मैं तुम्हारा नाम बदल सकता था, परन्तु उसकी आवश्यकता नहीं है और तुम्हारे भय के अँग को भी बुरा नहीं कहता। जिसकी प्रकृति में सतोगुण प्रधान होता है उनकी ऐसी ही गति रहती है। देवता इसी गुण की अधिकता से डरने वाले प्रसिद्ध हैं। अभय या तो मूढ़ होता है या ज्ञानी होता है! तुम ज्ञानी नहीं हो अज्ञानी हो। अब मेरी संगत और शरण में आने से तुमको ज्ञान की प्राप्ति होगी।"

विभीषण के राजतिलक के पश्चात् सुग्रीव आदि ने जब विभीषण के साथ राम का यह बर्ताव देखा, उनके आशय और मन्तव्य को समझ गये। बन्दरों की चंचल वृति की रोक थाम की। फिर सब राक्षस राम की शरण में आते गये और राम ने

राक्षसी दल का सेनापति विभीषण को बनाया।

फिर क्या था। धीरे २ लंका के कई राक्षस आये।। हनूमान बहुत चौकन्ने रहते थे कि कहीं रावण के गुप्त दूत दल में सम्मिलित न होने पावें। बिभीषण से पूछ कर तब उन्हें रहने की आज्ञा मिलती थी।

आठवां समुल्लास

राम की सैना की पूर्ति

पुल बँध रहा था। बन्दर और रीछ काम से लगे हुए थे। राम ने विभीषण हनुमान, सुग्रीव और जामवन्त को बुलाया। वह आये। लक्ष्मण पास बैठे हुऐ थे।

राम ने कहा—"मित्र सुग्रीव! किषकिंधा में सैना के इकट्ठा होने के समय मैंने कहा था कि अभी तक केवल दो अंग एकत्रित हुए हैं। एक अंग की कसर रह गई है। तुमको सुनकर आश्चर्य हुआ था। मैंने कहा था कि किसी समय यह रहस्य समझा दूंगा। वह समय आज आगया। तुम्हारी सेना का तीसरा अंग आकर जुड़ गया। अब वह त्रुटि जाती रही और सैना सर्वांग से आज पूरी है और तुमको अवश्य रावण पर विजय प्राप्त होगी और वह पराजय होगा!"

सुग्रीव ने चकित होकर मुँह खोला--"मैंने अब तक भी इसे नहीं समझा।"

राम बोले—"विभीषण आगये। उनके आने से कमी की पूर्ति हुई है और तुम्हारी सैना अब पूरी २ त्रिगुणात्मक है।"

कसर जो थी वह आज जाती रही।
नहीं तो यह चिंता सताती रही॥

अभय होके अब काम अपना करो।
न सोचो न दुविधा से जी में डरो॥

सुग्रीव—"मैं बन्दर हूं समझ बूझ से रहित! और भी समझाइये।"

राम-'मनुष्य शरीर में मन के तीन अंग होते हैं-सतोगुणी, रजोगुणी, तमोगुणी। इन्हीं को वैष्णवी, ब्रह्मावी और शैवी भी कहते हैं और ज्ञानी इनको अज्ञानी, चंचल और मूढ़ का नाम देते हैं। बात एक है, मन्तव्य एक है। केवल शब्द प्रयोग का भेद है।"

मन के तीन अंगों का स्वरूप यह है-'अज्ञानी वृति राक्षस है जो सुरक्षा, स्वार्थ, सम्मान की भूखी रहती है। इसी से इस का नाम राक्षस है और वह विभीषण भय आसक्त है।"

"चंचल वृति बन्दर है, जो संकल्प विकल्प उठाती रहती है और उसी में कूदती फांदती और उछलती है। इसका नाम इसी दृष्टि से बन्दर रख गया और वह तुम लोग हो।"

"मूढ़ वृति रीछ है। 'ऋक्ष' संस्कृत में चलने को कहते हैं। यह चुपचाप बिना कहे सुने काम में लगी रहती है। इसका नाम रीछ इसी दृष्टि से रखा गया और वह बूढ़ा वीर जामवन्त है।"

"जब तक यह तीनों इकट्ठे न हो जाँय और इन तीनों की नियमानुसार रोक थाम न करली जाय, तब तक किसी प्रकार की सिद्धि शक्ति, विजय और कीर्ति नहीं मिलती। अब तीनों अंग पूरे हो गये, त्रुटि जाती रही और मेरी चिंता दूर होगई।"

"इधर राक्षस हैं उधर वीर बन्दर।
मिले रीछ बलवान दोनों के अन्दर॥
यह तीनों बली साहसी और योधा।
सधे साधे और तीनों ही को जो सोधा॥

करेंगे वह काम अपना निष्काम होकर।
थकेंगे न उक्तायेंगे जाग सोकर॥
नहीं सामना इनका कोई करेगा।
जो लड़ने को आयेगा आकर मरेगा॥"

सुग्रीव—'यह तो मैंने समझ लिया। आपने भलीभाँति मुझे समझा दिया। अब संशय नहीं है। सावधान हो गया। प्रभो! अब यह बताइये कि इस शरीर में इन तीनों वृतियों के स्थान कहां कहां हैं और यह कैसे कैसे और किस किस विधि से काम करती हैं।"

राम ने कहा—"मैं रेत पर चित्र खींचता हूँ उसे देखो तो यह रहस्य भी तुम्हारी समझ में आ जायगा।"

और राम ने पृथ्वी पर अपनी उंगलियों से रेखा खींच कर मनुष्य का अर्ध चित्र बनाया। (देखो चित्र)

राम बोले—"इस चित्र में तीन जगह तीन बिंदियां दी हुई हैं। पहिली (१) भ्रूमध्य-दोनों भौंओं के बीच आँजना चक्र में यहां मन की अज्ञानी, सतोगुणी ऊँची और राक्षसी वृति रहती है। इस के काम का मंडल सारे शरीर में है। दूसरी (२) दोनों छातियों के बीच हृदय चक्र या अनाहत में है। यहां मन की चंचल रजोगुणी बिचली और बानरी वृति रहती है। इसके काम का मंडल यों तो चोटी से एड़ी तक है फिर भी उसे बड़ा नहीं कहते। तीसरी (३) नाभि चक्र या मनीपुर में मूढ़ वृति रहती है जो तमोगुणी तामसी निचली और रीछ है। इसके काम का मंडल बहुत बड़ा है।"

"ए सुग्रीव! ये न मानसिक वृतियों के रहने के स्थान हैं। यह तीनों मिली जुली रहती हैं। इनके कामों पर ध्यान देने से इनका पता लगता है।"

सुग्रीव ने पूछा—"इनके काम क्या हैं ?"

राम ने उत्तर दिया--"मन की निचली वृति जानती बूझती सोचती समझती है और अपने भाव को प्रगट करती रहती है। जैसे तुम खाना खा रहे हो. दाँत से काटते, जिह्वा से चुबलाते, रस लेते और ग्रास बना बना कर गले के नीचे उतारते जाते हो और साथ ही कहते जाते हो कि खाना लोना है या आलोना इत्यादि।

खा पीकर यह खाना नाभि चक्र को सौंप दिया गया। यहां मन की मूढ़ वृति काम करती है। यह न स्वाद लेती है, न बोलती है। केवल अपना काम करती रहती है। भोजन को पचाया, रस, रक्त, चर्बी, वीर्य, ओजस आदि बनाया और एड़ी से चोटी तक सब को आहार पहुंचा दिया। इसका मंडल शरीर की दृष्टि से सर्व व्यापक है।

अज्ञानी वृति जोत्राकार है। यह किसी किसी में जब फुरती है तो उस मनुष्य में बल बुद्धि आ जाती है। इस से जो प्रश्न करो सच्चे सच्चे उत्तर दे देती है। यह तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर यथाशक्ति दिये गये, लेकिन जब यह पूछोगे कि मेरा रूप क्या है या आत्मा ईश्वर ब्रह्म क्या है, कहाँ रहता है, तब चुप हो जायगी। इसका ज्ञान उसे नहीं है इसलिये अज्ञानी कहलाती है। खाती पीती, अपनी रक्षा भी करती है और नहीं भी करती है। इसका भी मंडल बहुत फैला हुआ है। जब यह किसी किसी में फुरती है तो अनाड़ी कहते हैं कि भूत प्रेत की छाया है और समझदार जान जाते हैं कि इस में अज्ञानी वृति की फुरना हुई है। यह इन तीनों के तीन काम के मंडल हैं !"

सुग्रीव—"तब तो यह तीनों निष्फल हुए।"

राम—"क्यों ?"

सुग्रीव—"ज्ञान इन तीनों में से किसी को भी नहीं हुआ।"

राम—"यह सच है। ज्ञान अनुभव से होता है। जब मन की यह तीनों वृतियाँ एकाग्र हो जाती हैं और गुरू मिल जाता है, तब ज्ञान की प्राप्ति होती है और वह अनुभव सम्पन्नता है। साधन सम्पन्न पहिले होना पड़ता है।

नवाँ समुल्लास

बन्दर वृति (चंचल वृति) की मुख्यता और उत्तमता

सुग्रीव ने राम की बातों को बड़े ध्यान से सुना। अन्त में कहने लगा—"हम आपके सेवक और सच्चे भक्त हैं। अब तक समझते थे कि हमसे अधिक आपकी भक्ति किसी में नहीं है। अब आज बातसे जान पड़ा कि चंचल को उपेक्षा अज्ञानी में विशेष भक्ति है और उसका पद बड़ा है।"

राम बोले—"तुमने समझने में भूल की। इन तीनों में मुख्यता चंचल वृति ही की है। यह न हो तो फिर कोई काम ही नहीं हो सकता। यह युक्ति को पाकर अज्ञानी और मूढ़ दोनों वृतियों को अपने बशीभूत करके ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर तक का पता लाती है और वह उसकी सहायक हो जाती हैं।"

सुग्रीव—"प्रभो! अभी आपने कहा कि इसके काम का मंडल छोटा है और यह विचला है और अब कहते हैं कि यह ऊपर नीचे हर जगह में जा सकती है।"

राम—"हां! लेकिन यह बात उस समय के लिये थी जब तक इसने दोनों वृतियों को अपना साथी नहीं बनाया था और न उसकी एकाग्रता थी। एकाग्रता में तीनों मिल जुल एक हो रहते हैं और उनको अलग कर दिखाना कठिन हो जाता है!"

सुग्रीव—"इसका उदाहरण?"

राम—"सोते समय अपनी मूढ़ वृत्ति को कहो कि ठीक बारह बजे रात को जगा देना और वह जगा देगी। जब इस प्रकार यह वशीभूत होगई तो यह आप चंचल वृत्ति को चेतावनी दे दे कर अज्ञानी वृत्ति के वश में लाने का उपाय बता देगी। पहिले ऐसा साधन होगा। फिर जब तीनों मिल कर एकाग्र हो गये तो रमने वाले राम की सैना पूरी होगई और त्रिकुटि (लंका) पर चढ़ाई करने की सूझी। यह साधारण बातों से दृष्टाँत दिया गया। अब साधन, कर्म, क्रिया और व्यवहार का दृष्टान्त सुनो:—

हनूमान, बन्दर और मन की एक चंचल वृत्ति है। उसने जामवन्त की मूढ़ वृत्ति को साथ लिया। सीता की खोज में निकले। सब व्याकुल हुए। जामवन्त ने हनूमान को चेतावनी दी। "यह काम तुम ही को सौंपा गया है।" हनुमान में उमंग उत्पन्न हुई। समुद्र को लांघा। अज्ञान वृत्ति विभीषण को साथ लिया। अब तीनों एकाग्र हैं और यह मिल जुल कर अपना काम करेंगी।"

सुग्रीव—"अच्छा समझा! अच्छा समझाया। समझाने की विधि अच्छी है। अब यह बताइये कि क्या यह वृतियां एक एक हैं या इनमें अनेकता भी है?"

राम—"मूढ़ वृति एकांगी होती है। वह अपने काम से सम्बन्ध रखती है। अज्ञान वृत्ति रक्षा का काम करती है। इसी से राक्षस कहलाती है। यह भी एकाँगी है। अब रह गई चंचल वृति, वह पाँच अंग वाली होती है और उनके नाम अहंकार, काम क्रोध और लोभ, मोह हैं।"

सुग्रीव—"दृष्टान्त से समझाइए।"

राम—"हँसे"

अपनी बातें पूछते हो रूप अपना जानकर।
मानते मनवाते हो कहलाते भी मानकर॥
तुम में जो मद है इसी का नाम हनुमंत जान लो।
तुम में जो है काम सुग्रीव इसको अब पहचान लो॥
अंग देने वाला अंगद क्रोध ही का अंग है।
काम का साथी बना और काम के वह संग है॥
लोभ नल है जो इकट्ठा करता है सामिग्री।
मोह है यह नील बन्धन में पड़ा है हर घड़ी॥

ऐ सुग्रीव! अलंकृत बन्दर रूपी चंचल वृति के यह पाँच अंग हैं।

हनुमान—अहंकार।

सुग्रीव—काम

अंगद—क्रोध

नल—लोभ और

नील—मोह

इतना समझा कर राम चुप हो गये।

सुग्रीव ने फिर पूछा—"जो कुछ आपने कहा वह सब सच है. लेकिन यहाँ राक्षस दल भी है और रीछ दल भी है। क्या राक्षस और रीछ दल के वीर लड़ाके अज्ञानी और मूढ़ वृतियों के अनेक रूप नहीं कहे जा सकते हैं?"

राम--"कहने को जो चाहो कहो लेकिन यह दोनों एक अंगी ही हैं। सबका अंग मिलाकर एक ही होता है। पाँच अंगी केवल चंचल वृति ही है।"

मुझे देखो! मेरी माता सतोगुणी कौशल्या। मैं राम उसका एक पुत्र हूं। मेरी दूसरी सौतेली माता तमोगुणी कैकई। भरत उसके एक ही पुत्र हैं। मेरी तीसरी सौतेली माता रजोगुणी

सुमित्रा इसके दो पुत्र लक्ष्मण और शत्रुहन हैं।"

"बन्दर रजोगुणी हैं। उनमें पाँच मुख्य वृतियां हैं और भी हो सकती हैं। मुख्यता केवल पांच को है। रीछ तमोगुणी, उसमें केवल एक वृति है। राक्षस सतोगुणी, उसमें भी एक ही वृति है।"

काम का सारा भाग चंचल वृति पर है और यही कारण है कि मैंने तुम्हारे साथ मित्रताई का नाता जोड़ा। तुम न मिलते तो न रीछ मेरे साथी होते न राक्षस। जो कुछ हुआ, होगा या हो रहा है, वह सब इसी चंचल वृति (बन्दर) का खेल होगा। और इसकी मुख्यता और उत्तमता है और मुझे तुम बन्दर सब से प्यारे हो।

सुग्रीव बहुत प्रसन्न हुये और हनुमान के साथ राम के चरणों में गिरे।

धन्य लीला आपकी है धन्य अद्भुत खेल है।
धन्य है यह मित्रता और धन्य ही यह मेल है॥

अब एक प्रश्न और रह गया।

राम—"उसे भी कह डालो।"

सुग्रीव—"हम सब आपके भक्त हैं। अब ऐसी शिक्षा दीजिये कि हम किस तरह आपकी सेवा कर कि हमारी भक्ति जल्द फलदायक हो।"

राम—"वह युक्ति हनुमान के नाम में पहिले ही से है। उन्होंने अपने मान का हनन कर दिया। तुम्हारा मान अपमान मेरे लिये हो। तुम्हारा क्रोध मेरे नाम पर हो। तुम्हार लोभ और मोह भी मेरे नाम पर मेरे ही लिये हो। यह केवल वृति का उलट फेर है। यही भक्ति है और ऐसी भक्ति मुझे प्यारी लगती है।"

दसवाँ समुल्लास

निर्गुण और सगुण ब्रह्म

राम समुद्र के तट पर या तो कुशासन पर बैठते थे या रेती से दूर हरी हरी घास पर आसन आरूढ़ होकर बात चीत करते थे। जो जो लोग लंका से दुखी होकर राम की शरण में आये बहुत सुखी थे। न वहाँ कहीं बस्ती थी न ग्राम और नगर थे। घने वृक्षों की छाया के अतिरिक्त रहन सहन का और कोई प्रबन्ध न था। खाने पीने की सामग्री का भी कहीं ठिकाना नहीं था। नारियल के पेड़ बहुत उगे थे। रीछ, बन्दर और राक्षस इनके फल तोड़ लाते। इन्हीं का पानी पीते और इनकी गिरी खाते रहते थे। यह सबका साधारण आहार था। राम के लिये कन्द मूल आता था। लक्ष्मण उसे आग में पकाते और राम के सामने ले जाकर रख देते। इस पर भी वह सब के सब बहुत सुखी थे और संसार के संकट क्लेश को भूल गये।

सायंकाल विभीषण पाँव दबाने गये। राम प्रसन्न थे। अवसर पाकर पूछा-"प्रभो! सगुण और निरगुण ब्रह्म में क्या भेद है?"

राम ने उत्तर दिया—"जो भेद समुद्र और नदी के जल में है वही निरगुण और सगुण ब्रह्म में है जल तो जल ही है, अभेद है। लेकिन नदी का जल मीठा है और समुद्र का जल खारा प्रतीत होता है। इसमें रस नहीं है उसमें रस है। जिसमें रस का गुण है वह सगुण है और जिसमें रस का गुण नहीं है वह निरगुण है।"

विभीषण—"भक्ति किसकी की जाय?"

राम--"भक्ति शब्द संस्कृत धातु 'भज' (सेवा करने)

से निकला है। साधारण सेवा शब्द, स्पर्श, रूप, रस गन्ध है। वाणी सुनो, यह शब्द सेवा है। अंग को हाथ लगाओ, यह स्पर्श सेवा है। रूप का दर्शन करो। यह रूप सेवा है। चरणा-मृत का रस लो। यह रस सेवा है। चढ़ाये हुये फूलों को सूंघो यह गंध सेवा है। ऐसी भक्ति तुम आप समझ सकते हो सगुण की हो सकती है या निरगुण की? निरगुण ब्रह्म सामान्य है। सगुण ब्रह्म विशेष है। ब्रह्म तो दोनों ही हैं लेकिन ब्रह्म न किसी का सहायक है न विरोधी है। भक्ति या सेवा किसी अभिप्राय और मन्तव्य को लेकर की जाती है और जब उसमें विरोध नहीं और न वह सहायता करता है तो उसकी भक्ति कैसे करोगे और क्यों करोगे! भक्ति की सम्भावना तो देह धारी में है और सगुण ब्रह्म देह धारी को कहते हैं। भक्ति तो जब होगी देह धारी की होगी। सामान्य (निरगुण) की भक्ति असम्भव और विशेष (सगुण) की सम्भव है।"

विभीषण--"सामान्य से सहायता क्यों नहीं मिलती? मिलनी चाहिये।"

राम—"जब सामान्य को विशेष बनालोगे तब सहायता सम्भव है। आग सर्व व्यापक है। कोई ऐसी वस्तु नहीं जिसमें आग न हो, परन्तु आग जब विशेष रूप से प्रगट होती है तब ही लोग उससे काम ले सकते हैं।

पत्थर में है पानी में है वायू में भरी है।
लकड़ी में हैं और नाज के भीतर यह धरी है॥
चकमाक से प्रगट करो और आग जलाओ।
जो चाहो फिर इस आग में रख के पकाओ॥
सामान्य है यदि आग विरोधी न किसी की।
जब रूप बिशेष उसमें तो फिर युक्ति भी निकली॥

इसी प्रकार किसी सामान्य रूप की भक्ति नहीं होगी। भक्ति जब होगी किसी विशेष रूप वाले ही की होगी। तुम मेरे भक्त हो। मैंने सुख रूप धारण कर रखा है। जैसे दीपक प्रकाशवान् होकर अपने प्रकाश का मंडल बनाता है और जो प्राणी उस मंडल में आता है उसे प्रकाश का लाभ प्राप्त होता है, वैसे ही तुम मेरे मंडल में आकर सुख, ज्ञान, बुद्धि और विवेक का लाभ उठा रहे हो। सामान्य ब्रह्म तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर कभी न देगा। यत्न कर देखो। सामान्य होने से वह तुम्हारी दृष्टि में तो आवेगा नहीं। तुम कैसे उससे पूछोगे और वह कैसे तुम्हें समझावेगा। निरगुण ब्रह्म की भक्ति केवल बात ही बात है और यह उन प्राणियों का कथन मात्र है जिनको कभी भक्ति तक की हवा नहीं लगी।"

विभीषण—"सगुण उपासना से निर्गुण की उपासना की सम्भावना है या नहीं ?"

राम—'उपासना कहते हैं पास बैठने को। संस्कृत 'उप' समीप) और 'आसन' बैठक। तुम देह धारी के पास बैठते हो या अदेह के ? अदेह की उपासना असम्भव है। उपासना जब होगी देहधारा ही की होगी। पानी सामने भरा पड़ा है उसे पीओ। कुआ खोदने का श्रम क्यों उठाया जाय। तुम्हारे प्रश्न के एक अंग का तो यह उत्तर हुआ।

दूसरे अंग का उत्तर वह है कि जब सगुण ब्रह्म की उपासना करली गई, तो स्थूल भक्ति, शब्द स्पर्श, रूप, रस गंध की चली जाती है। तब चित्त, मन, बुद्धि और अहंकार में भक्ति का रूप झलकने लगता है और विवेक शक्ति जाग उठती है। उसके जागने से अनुभव बढ़ता है और साधक अनुभव में लीन हो रहता है।

साधन के बिना अनुभव नहीं उभरता। अनुभव के बिना

ज्ञान नहीं होता। ज्ञान के बिना रूप की समझ नहीं आती। जब तक रूप का परिचय नहीं तब तक मुक्ति नहीं होती।

उपासना सगुण की जाती है। इसलिये सब को त्याग कर तुम केवल मेरी भक्ति में लगो। मैं ही तुम्हारा कार्य, धर्म, जप, तप और ज्ञान वैराग्य हूं, और जो कुछ होगा वह इसी से होगा।"

विभीषण—"निष्काम भक्ति की महिमा सब लोग गाते हैं।"

राम-"निष्काम भक्ति की जड़ में सकाम भक्ति रहती है। तुम लंका में थे। बुरी संगत थी। दुखी थे। नर्क अच्छा कुसंगत बुरी! तुम लंका से भाग कर मेरे पास आये। इसमें कामना थी या अकामना? तुम आगये। मेरे साथ तुम्हारा प्रेम बढ़ गया। पहिले तुम अपने लिये जीते थे। दुखी थे। अब मेरे लिए जीते हो, सुखी हो। पहिले सकाम भक्ति थी। अब वही निष्काम हो गई। इन दोनों में यह भेद है! सकाम भक्ति पहिले और निष्काम भक्ति पीछे!"

विभीषण की शंकाओं की निवृति होगई। वह चरणों में गिरा। राम उसी घास के आसन पर सो गये। लक्ष्मण पहरा देने लगे और विभीषण अपने स्थान पर चले गये।

ग्यारहवां समुल्लास

रावण के दूत

रावण ने गुप्त दूतों का ऐसा प्रबन्ध किया कि उसे पल क्षण का समाचार मिलने लगा। जब रामचन्द्र समुद्र के तट पर आकर ठहरे यह भी उनकी सैना के कौतुक देखने के लिये

आने जाने लगे। अब राक्षस दल बहुत हो गया था और सब के रहने की जगह अलग २ थीं।

विभीषण के जाने के पीछे जो दूत रावण के पास समाचार पहुँचाने गये, रावण ने उनसे पूछा-"ठीक २ बताओ तपस्वियों की क्या दशा है। भय न करो।"

दूतों ने कहा-"न जाने कहां से इतने बन्दर और रीछ राम के पास आये हैं। बनों में कहीं इतने नहीं देखे जाते और इनके डील डौल इतने भारी हैं कि पहले कभी नहीं देखे थे। सैना क्या है, टिड्डी दल है। बन्दर महा उत्पाती हैं। सुग्रीव और लक्ष्मण का प्रबन्ध न होता तो हमारे लिये जान बचाकर आना कठिन था। राम बड़े दयालु और कृपालु हैं। जो शरण में आता है उसे अभय कर देते हैं और वह निहाल हो जाता है।"

रावण ने पूछा—"क्या बन्दर राक्षसों से बलवान हैं?"

दूतों ने उत्तर दिया-"राक्षस उनको जीत न सकेंगे! आप की प्रजा उनकी सैना से आधी भी नहीं है। यह लंका में आ कर समायेंगे कहां! जिस बन्दर ने लंका को भस्म कर दिया, वह सब में छोटा है। अंगद, सुग्रीव, नल, नील और जामवन्तादि पहाड़ के समान भारी और गम्भीर हैं। इन सब में हथियारों से भी अधिक बल है। कहने वाले कहते थे कि अठारह पदम बन्दर इकट्ठे किये गये हैं। हम सब लोग फंस गये थे! बन्दर नहीं आने देते थे। इतने में लक्ष्मण आगये। हमको असमर्थ देख कर छुड़वा दिया। आपके नाम एक पत्र भी दिया है।"

रावण ने पत्र माँगा। दूतों ने उसे दिया। लिखा हुआ था—"राम का सामना संसार में कोई नहीं कर सकता। युद्ध के लिये तत्पर हो जा। केवल शरण में आने से तू बच

सकता है।"

शुकनाथ रावण का दरबारी था। यह स्याना और स्वभाव का अच्छा था। अगस्त्य ऋषि के श्राप से राक्षस होगया था। कहने लगा। "सीता को देदो। राम से मैत्री करलो। इसमें भलाई है।"

रावण ने कहा—"तपस्वी बालक के अहंकार को बातों में आ गया। तेरा जी चाहे तो तू भी राम के पास चला जा। यहां क्यों पड़ा है।"

वह उठा। नमस्कार करके लंका से चला आया और राम का अनुगामी हो गया।

रावण ने दूतों की बातों पर विचार करके मेघनाथ को आज्ञा दी कि सैना इकट्ठी रहे। कोई भय नहीं है। इन बन्दरों को राक्षस दिनों में खा जायेंगे।"

महारामायणम्
पाचवां खंड समाप्त